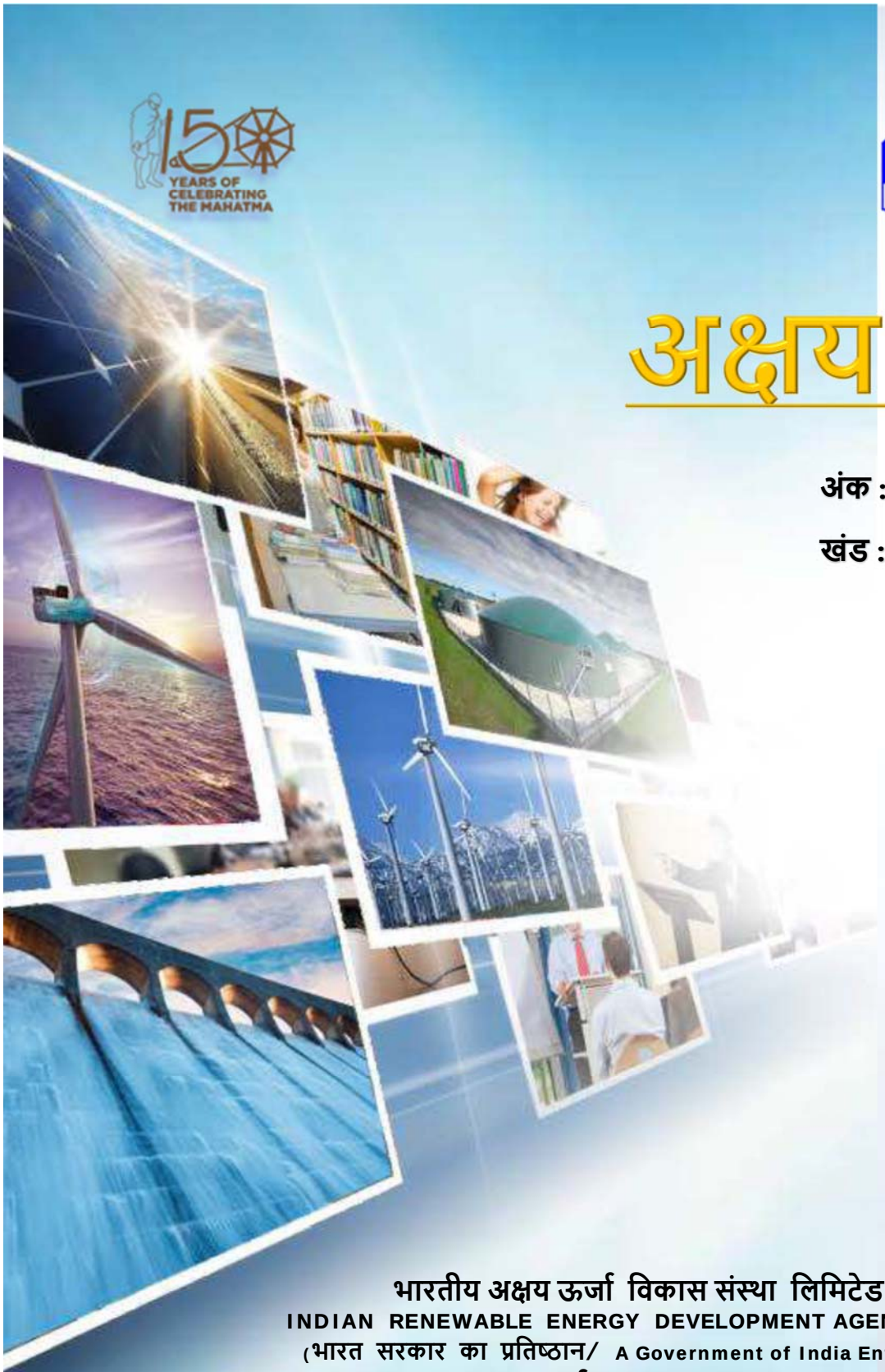

इरेडा
IREDA

अक्षय क्रांति

अंक : जनवरी से जून , 2019

खंड : अर्धवार्षिक

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड

INDIAN RENEWABLE ENERGY DEVELOPMENT AGENCY LTD

(भारत सरकार का प्रतिष्ठान/ A Government of India Enterprise)

शाश्वत ऊर्जा / Energy for Ever

अक्षय क्रांति

संरक्षक

श्री प्रवीण कुमार

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

परामर्शदाता

डॉ. पी. श्रीनिवासन

महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं सीएसआर)

संपादक

श्री नरेश वर्मा

उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

सह संपादक

श्रीमती संगीता श्रीवास्तव

मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

विशेष सहयोग

श्री आलर कुल्लू, सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

श्रीमती शशि बाला पपनैं, अधिकारी (जनरल)

सुश्री तुलसी, वरि. कार्यालय सचिव

सत्यमेव जयते

आर. के. सिंह

विद्युत एवं नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) एवं
कौशल विकास और उद्यमशीलता राज्य मंत्री
भारत सरकार

संदेश

हिन्दी दिवस के अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से शुभकामनाएं।

किसी भी राष्ट्र के लिए भाषा का अपना महत्व होता है। राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए भाषा के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। राष्ट्र के जीवन में भाषा प्राण वायु का संचार करती है। भारत वर्ष में यह कार्य हिन्दी भाषा कर रही है। हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो सम्पूर्ण राष्ट्र को एकसूत्र में बांध कर रख सकती है। विभिन्न सांस्कृतिक विविधताओं के होते हुए भी हिन्दी भाषा पूरे राष्ट्र को जोड़ती है। इसी तथ्य को स्वीकार करके ही संविधान सभा ने वर्ष 1949 में 14 सितंबर को हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में अपनाया था। तभी से इस दिन को संकल्प दिवस मानकर प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

सरकारी कामकाज में सामान्यतः हिन्दी का प्रयोग हो, यही संविधान की मूल भावना के अनुरूप होगा। साथ ही, जनता की भाषा में सरकारी कामकाज होने से विकास की गति में तेजी आएगी और प्रशासन में भी पारदर्शिता आएगी। अतः हमारा यह कर्तव्य हो जाता है कि राजभाषा के रूप में सरकारी कामकाज में प्रयोग की जाने वाली हिन्दी भाषा सरल, सहज और सामान्य जनता की समझ में आने वाली हो।

हम सरल हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में प्रचार-प्रसार से अपने मंत्रालय की अक्षय ऊर्जा की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचा सकते हैं। इसी क्रम में, हिन्दी दिवस के अवसर पर मंत्रालय में विभिन्न प्रतियोगिताएं सरल और सहज हिन्दी में आयोजित करवाने पर विशेष प्रोत्साहन देना चाहिए। इस दौरान हिन्दी के प्रयोग के छोटे-छोटे प्रशिक्षण सत्रों का भी आयोजन किया जाए।

मंत्रालय में अनौपचारिक वार्तालापों, सेवाओं व चर्चाओं के साथ-साथ लिखित और मौखिक रूप से हिन्दी को आधिकारिक तौर पर अपनाए जाने की जरूरत है।

हिन्दी दिवस के इस पावन अवसर पर हम सब मिलकर यह शपथ लें कि हम सभी राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार को प्रभावी एवं व्यापक बनाने के लिए सतत एवं सक्रिय प्रयास करेंगे और भारत के संविधान में राजभाषा हिन्दी को प्राप्त सम्मान को बनाए रखेंगे।

जय हिन्द।

(आर. के. सिंह)

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2019

संदेश

प्रिय साथियों,

हिंदी पखवाड़ा के पावन अवसर पर मैं आप सबको हार्दिक शुभ कामनाएं देता हूँ ।

14 सितम्बर का दिन हिंदी के सम्मान में प्रति वर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है । क्योंकि भारत कि संविधान सभा ने 14 सितम्बर 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया ।

हम गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा जारी राजभाषा के कार्यान्वयन के बारे में समय-समय पर दिए गए दिशा-निर्देशों और लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहे हैं ।

जैसा कि आप सब जानते हैं कि हिंदी भारत की अधिकांश आबादी द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा है । हिंदी भाषा आज 21वीं सदी में भी एक सरल, समृद्ध और वैज्ञानिक भाषा है । खासकर इस इंटरनेट दौर में सभी क्षेत्रों में चहुमुखी रूप में सोशल मिडिया, सिनेमा, व्यवसाय, मार्किटिंग एवं गुगल, स्मार्ट फोन आदि प्लेटफॉर्म में भी बढ़-चढ़कर प्रयोग में लाई जा रही है ।

यह हर्ष का विषय है कि इरेडा में सरकारी काम-काज हिंदी में किए जाने में लगातार प्रगति हो रही है और इसकी सराहना मंत्रालय, राजभाषा विभाग एवं सरकारी हिंदी विभाग के द्वारा भी की गई है। हिंदी पखवाड़े में हिंदी-प्रतियोगिताओं तथा हिंदी कार्यशाला का भी आयोजन किया जा रहा है तथा इस वर्ष भी इरेडा को एक शील्ड प्राप्त हुई है जो एक गर्व की बात है । (राजभाषा अकैडमी द्वारा इरेडा को जुलाई माह में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु **'शील्ड'** प्रदान की गई ।)

अब समय आ गया है कि हम सभी हिंदी को केवल ऑफिस में सिर्फ अनुवाद तक ही सीमित न रखकर, मौलिक लेखन, घर-घर में बातचीत की भी भाषा बनाएं ।

इरेडा में 14 से 28 सितम्बर, 2019 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया जा रहा है । इस अवसर पर मैं सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से कहना चाहूँगा कि वे इस पखवाड़े के दौरान होने वाली प्रतियोगिताओं/कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक अधिक से अधिक संख्या में भाग लें और इसे सफल बनाएं ।

अंत में, मुझे आशा ही नहीं पूरा विश्वास है कि आप सब राजभाषा हिंदी की प्रगति हेतु अपने नियमित कामकाज में अपना अप्रीतम योगदान देंगे ।

नई दिल्ली
14 सितम्बर, 2019

प्रवीण कुमार
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड

इरेडा विज़न

शाश्वत ऊर्जा

इरेडा मिशन

" स्थायी विकास के लिए अक्षय स्रोतों द्वारा ऊर्जा उत्पादन, ऊर्जा दक्षता और पर्यावरण प्रौद्योगिकियों के क्षेत्रों में आत्मनिर्भर निवेश को प्रोत्साहित व वित्तपोषित करने वाली एक अग्रणी, प्रतिभागियों की हितैषी एवं प्रतियोगी संस्था के रूप में बने रहना। "

इरेडा के मुख्य उद्देश्य

क. नए एवं अक्षय स्रोतों के जरिए विद्युत और/या ऊर्जा का उत्पादन करने और ऊर्जा दक्षता के माध्यम से ऊर्जा का संरक्षण करने के लिए विशिष्ट परियोजना एवं योजना को वित्तीय सहायता प्रदान करना।

ख. अक्षय ऊर्जा एवं ऊर्जा दक्षता/संरक्षण परियोजनाओं में दक्ष एवं प्रभावी वित्तपोषण प्रदान करने के लिए अग्रणी संगठन के रूप में अपनी स्थिति को बनाए रखना।

ग. अभिनव वित्तपोषण द्वारा अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में इरेडा की हिस्सेदारी बढ़ाना।

घ. प्रणालियों, प्रक्रियाओं एवं संस्थानों में निरंतर सुधार के जरिए ग्राहकों को प्रदान की गई सेवाओं की दक्षता में सुधार करना।

ङ. ग्राहक संतुष्टि के माध्यम से प्रतियोगी संस्थान बनने का प्रयास करना।

गुणवत्ता नीति

इरेडा अपने उपभोक्ताओं को पूर्ण संतुष्टि एवं पारदर्शिता प्रदान करने के लिए दक्ष प्रणाली एवं प्रक्रियाओं के जरिए अक्षय ऊर्जा एवं ऊर्जा दक्षता/संरक्षण में अभिनव वित्त पोषण प्रदान करने के लिए एक अग्रणी संगठन के रूप में अपनी स्थिति कायम रखने के लिए प्रतिबद्ध है।

इरेडा गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली के जरिए अपने उपभोक्ताओं को दी जाने वाली सेवाओं के गुणवत्ता में लगातार सुधार के लिए प्रयास करेगी।

गुणवत्ता उद्देश्य

क. - उपभोक्ता की पूर्ण संतुष्टि के लिए प्रयास करना।

ख. - क्षमता में निरंतर उन्नयन और कर्मचारियों के पेशेवर कौशलों में सुधार।

ग. - उपभोक्ताओं को प्रदान की जाने वाली सेवाओं की दक्षता में सुधार।

घ. - प्रणालियों, प्रक्रियाओं एवं सेवाओं में निरंतर सुधार।

अक्षय क्रांति

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	रचना वर्ग	लेख/रचयिता	पृष्ठ
1.	जीवन और इससे परे	लेख	डॉ. पी. श्रीनिवासन	1
2.	माँ, मैं तो तेरा छोटा बच्चा हूँ	कविता	पीयूष अग्रवाल	3
3.	आस्था, तीर्थ और पर्यटन का केंद्र राम रेखाधाम	लेख	आलर कुल्लू	4
4.	बिजली क्षेत्र में सुधार और 24/7 बिजली की आपूर्ति	लेख	रिज़वान अतहर	6
5.	रोमियो	कविता	संगीता श्रीवास्तव	8
6.	मुंशी प्रेमचंद की यह दिल को छू जाने वाली कविता एक सबक का पाठ पढ़ाती है ।	कविता	नरेश वर्मा	9
7.	“बुढ़ापा”	कविता	मनीष चन्द्र	10
8.	बेटी है अभिमान	कविता	सरबजीत कौर	11
9.	शिंचैन	कविता	महिका हर्षल	12
10.	मेरा विज़न – भ्रष्टाचार मुक्त भारत	लेख	हीरा वल्लभ शर्मा	13
11.	“चैन से मर भी नहीं सकती”	लेख	गिरीश चन्द्र शर्मा	18
12.	“कन्यादान” – ‘एक पिता की कलम से’	कविता	गोकुलनन्दा बेहेरा	19
13.	प्रशंसा की शक्ति	लेख	डॉ. ईश्वर सिंह	20
14.	हिंदी के उच्चारण-स्थान और वर्णों का वर्गीकरण	--	--	23
15.	उठो सोने वालों	कविता	अंकिता गुप्ता	24
16.	राजभाषा हिंदी से संबंधित बैठक	-	संगीता श्रीवास्तव	25
17.	हिंदी भाषा	लेख	रोमेश कुमार गुप्ता	27
18.	माँ-बाप	कविता	आर.के.विमल	29
19.	भगत सिंह के भाई से वो यादगार मुलाकात	लेख	रोहित गुप्ता	30
20.	कार्यक्रमों की खास झलकियाँ	--	हिंदी विभाग	32

डॉ. पी. श्रीनिवासन
महाप्रबंधक (मानव संसाधन), इरेडा

जीवन और इससे परे

"जीवन दुःख से सुख, असुरक्षा से लेकर सुरक्षा, बेचैनी से लेकर आराम की जीवन यात्रा है, और इस प्रक्रिया में इतना संघर्ष और अराजकता है, कि यह हमें और अधिक अनुभवी बना रही है, क्या यह नहीं ?"

जैसा कि ऊपर उल्लेख स्वामी सुखओबोधानंधा का व्यावहार मूलक कहावत है। जब हमारी धुनों पर अन्य लोग नृत्य करते हैं तब हमें खुशी का अनुभव होता है, यह साधारण मान्यता है । जब मतभेद और चुनौतियां, चाहे वह घर में या कामों में या कहीं भी हों, हम चुनौतियों का सामना करने में असमर्थ होते हैं। हम सोचते हैं और उम्मीद करते हैं दूसरे लोग हमसे अधिक सुखी हैं। हम यह भी मानते हैं कि अकेले हम ही कठिनाइयों से गुजरते हैं। जब हम अपनी अपेक्षाओं से दरकिनार होते हुए विपत्तियों से झूझते हैं तो हमें उस पूर्ण पल को अनुभव करते हैं । तमाम दुखों और कमजोरियों के दौरान, अपना साहस ही साथ देता है । इसे आसानी से समझने के लिए एक कहानी के माध्यम से समझाने का प्रयास किया गया है ।

छात्रों से भरे सभागार में तनाव प्रबंधन के सिद्धांतों को पढ़ाते समय, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस के प्रोफेसर विजय स्टेज पर चारों ओर घूमने लगा । उन्होंने जैसे ही एक पानी का गिलास उठाया, सभी छात्र यह सोचने लगे कि अब "ग्लास आधा खाली या ग्लास आधा भरा है" से संबंधित प्रश्न पूछा जाएगा । लेकिन इसके बजाय, मुस्कुराते हुए प्रोफेसर ने पूछा, "मैं जो पानी का गिलास पकड़े हुए हूं वो कितना भारी हैं ?"

छात्रों ने आठ औंस से लेकर दो पाउंड तक भारी पानी का गिलास चिल्लाकर उत्तर दिए । प्रोफेसर विजय ने जवाब दिया, "मेरे दृष्टिकोण से, इस गिलास का पूर्ण वजन कोई मायने नहीं रखता है। यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि मैं इसे कितनी देर तक पकड़े रहता हूं। अगर मैं इसे एक या दो मिनट के लिए पकड़ता हूं, तो यह काफी हल्का है। अगर मैं इसे एक घंटे के लिए सीधा रखता हूं, तो इसका वजन मेरे हाथ पर दर्द कर सकता है। अगर मैं इसे सीधे एक दिन के लिए पकड़ता हूं, तो मेरी बांह में ऐंठन होगी और पूरी तरह से सुन्न और लकवाग्रस्त महसूस होगा, जिससे मुझे फर्श पर गिलास गिराने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। प्रत्येक मामले में, गिलास का वजन नहीं बदलता है, लेकिन जितनी देर मैं इसे पकड़ता हूं, यह उतना ही भारी लगता है। "

छात्रों ने सहमति में अपने-अपने सिर हिलाए, तब प्रोफेसर ने आगे कहा कि "जीवन में आपके तनाव और चिंताएं इस पानी के गिलास के समान है । उनके बारे में कुछ देर सोचेंगे तो कुछ नही होगा । और अगर थोड़ा लंबा सोचेंगे तो आप थोड़ा दर्द महसूस करना शुरू करेंगे । दिन भर उनके बारे में सोचें, तो आप पूरी तरह से स्तब्ध और लकवाग्रस्त महसूस करेंगे - कुछ भी करने में असमर्थ होने पर आप उसे छोड़ देंगे "

अपने तनाव और चिंताओं को दूर करने के लिए , इसे याद रखना आवश्यक है। जितने जल्दी अपने सभी तनाव को शाम होने से पहले उतार देंगे उतना अच्छा होगा , दिन के दौरान क्या होता है इससे कोई फर्क नहीं पड़ता । रात भर और अगले दिन इस तनाव को अपने साथ ना ही रखें। यदि आप अभी भी कल के तनाव का भार महसूस करते हैं, तो यह एक मजबूत संकेत है कि गिलास को अब नीचे रख देना चाहिए ।

पीयूष अग्रवाल
सहायक प्रबंधक वित्त -एवं लेखा विभाग, इरेडा

माँ, मैं तो तेरा छोटा बच्चा हूं

तूने मुझ को जन्म दिया, मेरी खुशी में ही अपना जीवन जिया,
चलना तुमने मुझे सिखाया, सही गलत का फर्क बताया !

घुटनों पर जब मै पास आता, मुझे गले लगाती थी ,
आसूं पोछ सारे मेरे, हसना मुझे सिखाती थी !

देखकर अपने बच्चे को, हो जाती खुशी से पागल ,
होते तेरी आंखों में आसूं ,ना रहता गम का बादल !

स्कूल से जब मैं वापस आता , अपने हाथों से खिलाती थी ,
खुद चाहे हो भूकी जितनी, मेरा पेट भर जाती थी !

गिर कर जब मैं चोट लगाता, गुस्सा मुझे दिखाती थी,
चाहे हो मेरी ही गलती,पर मुझको सही बताती थी !

जब मैं होता चिंता में , नींद तुझे ना आती थी,
किसी ना किसी बहाने , मेरे पास बैठ जाती थी !

तेरी वो आवाज़ माँ , मेरे कानों में बजती है ,
एक बार तुझे देखने को, मेरी आंखें तरसती है ।

बातें करने को मुझसे, अब कोई मेरे पास नहीं ,
तेरा ही सिर्फ एहसास मुझे मां, और किसी से आस नहीं !

अब होली दीवाली माँ -, सब फिके से लगते है
थक गया मैं , इस दुनिया से, जहां रिश्ते, चीजों से सस्ते हैं !

मैं तेरी लोरी माँ ,आज भी गुनगुनाता हूं !
रात को अकेले सोने से, आज भी मैं कतराता हूं ।

ले चल मुझे उस बचपन में, माँ, मुझे तेरी गोद में सोना है ,
तेरी आंचल से लिपट कर ,जोर जोर से रोना है !

तू ही मेरी दोस्त माँ ,तू ही मेरी सबसे खास ,
इस जीवन में काश तू , होती हमेशा मेरे पास!

कभी मैं झूठा ,कभी मैं सबसे सच्चा हूं ।
हूं मैं तेरा राज दुलारा , इस जग में सबसे अच्छा हूं !

कहने को हो गया बड़ा ,अपने पैरों पर खड़ा
माँ तेरी नजर में, आज भी मैं कच्चा हूं
मां मैं तो तेरा छोटा बच्चा हूं!
मां मैं तो तेरा छोटा बच्चा हूं !

°°°°°°°°°°

आलर कुल्लू
सहायक प्रबंधक (राजभाषा), इरेडा

आस्था, तीर्थ और पर्यटन का केंद्र राम रेखाधाम

झारखंड की राजधानी रांची से लगभग 196 किलोमीटर की दूरी पर स्थित दक्षिणी छोटानागपुर का प्रसिद्ध तीर्थ और पर्यटन स्थल रामरेखा धाम सिमडेगा से पश्चिम हरे-भरे जंगलों के बीच पहाड़ी की चोटी पर बसा है और इसी के आंचल में बसा है मेरा गाँव केशलपुर। आस्था का केंद्र बने रामरेखा धाम में हर वर्ष कार्तिक पूर्णिमा और माघ पूर्णिमा के अवसर पर लगनेवाले मेले में भक्तों की भीड़ उमड़ती है। रामरेखा धाम मेले में बिहार, ओडिशा, पश्चिम बंगाल व छत्तीसगढ़ के अलावा झारखंड के कोने-कोने से लाखों की संख्या में लोग पहुंचते हैं। हाल ही में, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख डॉ. मोहन भागवत ने भी रामरेखा धाम के दर्शन करने गए थे।

रामरेखा धाम

राम रेखाधाम की प्राकृतिक छटा लोगों का मन मोह लेती है । मंदिर परिसर स्थित गुफा व मंदिर में प्रवेश करने से सुकून और शांति मिलती है। मान्यता है कि मंदिर में पूजा-अर्चना करने से हर मन्नत पूरी होती है कार्तिक पूर्णिमा और माघ पुर्णिमा के अवसर पर लगनेवाले तीन दिवसीय मेले में लोगों को हुजूम उमड़ता है।

रामरेखा धाम में आस्था का केंद्र पहाड़ की चोटी पर स्थित धनुषाकार स्नान कुंड, सीता चौकी, अग्नि कुंड, मुनी गुफा, आकाश गंगा, पंचमुखी बजरंग बली की प्रतिमा और बाबा की समाधि स्थल है । पहाड़ की चोटी पर स्थित धनुषाकार कुंड में स्नान कर भगवान के दर्शन के लिए कतारबद्ध तरीके से श्रद्धालु जाते हैं । कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर रामरेखाधाम जाने के लिए श्रद्धालुओं के लिए सरल मार्ग है । रांची की ओर से बस से आने वाले श्रद्धालु सिमडेगा बस स्टैंड में उतर जाएं और राउरकेला,ओडिसा की ओर से आने वाले श्रद्धालु भी सिमडेगा बस स्टैंड में उतर जायें । बस स्टैंड से छोटी-बड़ी गाड़ियां रामरेखा धाम तक जाती है । राउरकेला व रांची की ओर से निजी वाहन से आने वाले श्रद्धालु सिमडेगा झूलन सिंह चौंक से पश्चिम कुरडेग रोड होते हुए कोचेडेगा तक जायें । कोचेडेगा से बायें रामरेखा पथ पर चल कर श्रद्धालु सीधे रामरेखा धाम पहुंच सकते हैं । छत्तीसगढ़ की ओर से आनेवाले श्रद्धालु तपकारा,कुरडेग,किनकेल होकर रामरेखा धाम पहुंच सकते है।

कहा जाता है कि बीरू के राजा हरिराम सिंह देव शिकार करते हुए घनघोर जंगल के बीच स्थित प्रचीन गुफा के पास पहुंचे । गुफा को देख उन्हें अंदर जाने की उत्सुकता हुई । एक बड़ा पत्थर से गुफा का द्वार ढंका हुआ था । राजा हरिराम सिंह देव लकड़ी की सीढ़ी बना कर गुफा के अंदर प्रवेश कर गये । कुछ दूर पर ही एक शिवलिंग मिला और राजा ने उस शिवलिंग की पूजा की इसके बाद आगे बढ़े । गुफा के अंदर एक श्याम रंग का शंख मिला, जिसे उठाने पर उसमें से राम नाम की धुन सुनाई दे रही थी । इस बात की जानकारी राजा ने गाँव के लोगों को दी । इसके बाद से वहां पूजा-अर्चना शुरू हो गयी तब से इस गुफा में भगवान राम,सीता और लक्षण की पूजा-अर्चना की जाती है।

श्रीराम के चरण पड़ने से ही यहां का नाम रामरेखा धाम पड़ा, त्रेतायुग के दौरान 14 वर्षों के वनवास के दौरान मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, सीता और भाई लक्ष्मण के साथ यहां कुछ दिनों तक यहां ठहरे थे । कहा जाता है कि इस गुफा का उपरी भाग सिर में सट रहा था । श्रीराम ने धनुष से मंदिर के अंदर गुफा के उपरी हिस्से में एक लंबी लकीर खींच दी । श्रीराम द्वारा मंदिर के अंदर गुफा के उपरी हिस्से में खींची गयी रेखा के कारण धाम का नाम रामरेखा धाम पड़ा । मंदिर के अंदर गुफा के उपरी हिस्से में आज भी रेखा को देखा जा सकता है।

झारखंड के आस्था का केंद्र, प्रमुख तीर्थ और पर्यटन स्थल रामरेखा धाम आइये,भगवान राम का दर्शन कीजिए,धनुष कुंड में स्नान कीजिए और पुण्य अर्जित कीजिए ।

पीयूष अग्रवाल
सहायक प्रबंधक- वित्त एवं लेखा विभाग

भारतीय अक्षय ऊर्जा : भविष्य की ऊर्जा

भारत अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में दुनिया का चौथा सबसे आकर्षक नवीकरणीय ऊर्जा बाजार है। भारत ने अक्टूबर 2018 तक, स्थापित अक्षय ऊर्जा क्षमता में विश्व में पांचवां स्थान प्राप्त किया है । क्लाइमेटस्कोप 2018 की रिपोर्ट के अनुसार भारत को स्वच्छ ऊर्जा में संक्रमण के लिए उभरती अर्थव्यवस्थाओं में दूसरा स्थान दिया गया है।

पेरिस समझौते की पुष्टि के बाद भारत सरकार का ध्यान स्वच्छ ऊर्जा की ओर गया और पिछले कुछ वर्षों में ही भारत की स्थापित अक्षय ऊर्जा उत्पादन क्षमता में तेज गति से वृद्धि हुई है | वित्त वर्ष 2014-18 के बीच 19.78 प्रतिशत का सीएजीआर पोस्ट किया गया है जो कि सराहनीय है । सरकार और बेहतर अर्थशास्त्र के बढ़ते समर्थन के साथ, यह क्षेत्र निवेशकों के दृष्टिकोण से आकर्षक हो गया है। भारत की ऊर्जा मांग तेज गति से बढ़ रही है और 2040 तक इससे 15,820 टी डब्लू एच तक पहुंचने की उम्मीद है । अगर भारत इस बढ़ती हुई मांग को अपने बलबूते पूरा करना चाहता है तो अक्षय ऊर्जा की इसमें एक महत्वपूर्ण भूमिका रहने वाली है।

देश में अप्रैल 2019 तक कुल स्थापित अक्षय ऊर्जा क्षमता (बड़े हाइड्रो को छोड़कर)78.35 गीगावाट थी । ऑफग्रिड अक्षय ऊर्जा क्षमता में भी वृद्धि हुई है- जैसे की अक्टूबर 2018 तक, वेस्ट टू एनर्जी , बायोमास गैसीफायर , एसपीवी सिस्टम के लिए उत्पादन क्षमता क्रमशः 175.28 मेगावाट ,163.37 मेगावाट और 767.51 मेगावाट रही । 363 गीगावाट की संभावित क्षमता के साथ और नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र पर केंद्रित नीतियों के साथ, भारत में उत्तरी भारत नवीकरणीय ऊर्जा का केंद्र बनने की उम्मीद है।

डिपार्टमेंट ऑफ प्रमोशन ऑफ इंडस्ट्री एंड इंटरनल ट्रेड द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, अप्रैल 2000 और मार्च 2019 के बीच भारतीय गैर ऍफ़ डी आई) पारंपरिक ऊर्जा क्षेत्र में फॉरेन डायरेक्ट इन्वेस्टमेंट- का अंतर्प्रवाह (7.83 बिलियन अमेरिकी डॉलर था। 2014 से भारत के नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में यूएस $ 42 बिलियन से अधिक का निवेश किया गया है । देश में स्वच्छ ऊर्जा में नए निवेश 2018 में $ 11.1 बिलियन तक पहुंच गए है।

भारतीय अक्षय ऊर्जा क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार द्वारा की गयी कुछ पहलें इस प्रकार हैं :

- देश में हाइड्रो परियोजनाओं के विकास के लिए 2018-28 के लिए एक नई जल विद्युत नीति का मसौदा तैयार किया गया है।
- भारत सरकार ने स्वच्छ कोयला उपयोग के लिए उन्नत अल्ट्रा-सुपरक्रिटिकल प्रौद्योगिकियों पर यूएस $ 238 मिलियन के राष्ट्रीय मिशन को लागू करने की योजना की घोषणा की है।

- नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (एम एन आर ई) ने सोलर रूफटॉप सेक्टर को कस्टम और एक्साइज ड्यूटी लाभ प्रदान करने का निर्णय लिया है, जो बदले में बिजली पैदा करने की लागत को कम करेगा और विकास को बढ़ावा देगा ।
- भारतीय रेलवे द्वारा निरंतर ऊर्जा कुशल उपायों और स्वच्छ ईंधन के अधिकतम उपयोग के माध्यम से 2030 तक उत्सर्जन स्तर में कटौती करने के लिए अधिकतम प्रयास किया जा रहा है।

सरकार के कुशल प्रयासों से इस क्षेत्र ने कईं उपलब्धियां हासिल करी है, जिनमें से कुछ इस प्रकार है :

- वित्तीय वर्ष 14-18 के बीच सौर क्षमता में आठ गुना वृद्धि हुई है। भारत ने 2017-18 में 11,788 मेगावाट अक्षय ऊर्जा क्षमता का रिकॉर्ड जोड़ा ।
- 26,694 मेगावाट की क्षमता वाले कुल 47 सौर पार्क भारत में नवंबर 2018 तक स्वीकृत किए गए हैं, जिनमें से 4,195 मेगावाट की क्षमता को चालू किया गया है।
- भारत में नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों (बड़े हाइड्रो को छोड़कर) से बिजली उत्पादन वित्त वर्ष 18 में रिकॉर्ड 101.84 बिलियन यूनिट तक पहुंच गया और अप्रैल 2018-जनवरी 2019 के बीच 107.22 बिलियन यूनिट तक पहुंच गया है ।

भारत सरकार स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों के बढ़ते उपयोग के लिए प्रतिबद्ध है और पहले से ही विभिन्न बड़े पैमाने पर स्थायी बिजली परियोजनाओं का संचालन कर रही है और फलस्वरूप हरित ऊर्जा को भारी बढ़ावा दे रही है। इसके अलावा, नवीकरणीय ऊर्जा में सभी स्तरों पर, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के कई अवसर पैदा करने की क्षमता है। नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय ने (एमएनआरई)2022 तक 175 गीगावॉट की अक्षय ऊर्जा क्षमता स्थापित करने के लिए एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है, जिसमें लगभग 100 गीगावॉट सौर ऊर्जा के लिए, 60 पवन ऊर्जा के लिए और अन्य हाइड्रो व जैव के लिए योजना बनाई गई है ।

अगर जून 2018 तक की बात करें तो भारत सरकार , 2022 तक 225 गीगावॉट अक्षय ऊर्जा क्षमता प्राप्त करने का लक्ष्य रखती है, जो पेरिस समझौते के 175 गीगावॉट के लक्ष्य से बहुत आगे है। भारत के अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में अगले चार वर्षों में 80 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक के निवेश को आकर्षित करने की उम्मीद है ।

यह उम्मीद की जा रही है की वर्ष 2040 तक कुल बिजली का लगभग 49 प्रतिशत नवीकरणीय ऊर्जा से उत्पन्न होगा, क्योंकि बिजली को एकत्र करने के लिए अधिक कुशल बैटरियों का उपयोग किया जाएगा जो सौर ऊर्जा लागत में 66 प्रतिशत की तुलना में और कटौती करेगा। कोयला के स्थान पर नवीकरणीय ऊर्जा का प्रयोग भारतीय रुपये 54,000 करोड़ यूएस $ 8.43 अरब डॉलर प्रतिवर्ष की बचत होगी ।

रिज़वान अतहर
कार्यकारी सचिव, इरेडा

बिजली क्षेत्र में सुधार और 24/7 बिजली की आपूर्ति

बिजली और नवीकरणीय ऊर्जा राज्य मंत्री ने बिजली की कीमत कम करने और उपभोक्ताओं के अधिकारों को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से भाजपा की नेतृत्व वाली सरकार का मसौदा तैयार करने के लिए भाजपा की केंद्र सरकार की योजना के बारे में और क्षेत्र से जुड़े अन्य मुद्दों के बारे में बात की । उन्होने कहा कि हम नए सुधारों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। हमने पहले से ही पहुंच का विस्तार किया है, अब हर गाँव बिजली से जुड़ा हुआ है। सरकार ने हर घर, केवल राजस्थान और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों को छोड़ कर, उत्तर प्रदेश के कुछ घर, जो कनेक्शन लेने के लिए तैयार नहीं थे, क्योंकि वे अवैध बिजली का उपयोग कर रहे हैं।

इसके अलावा, सभी घर बिजली से जुड़े हुए हैं। सरकार की दीन दयाल ग्राम ज्योति योजना, और ट्रांसमिशन नेटवर्क के माध्यम से वितरण प्रणाली को मजबूत किया गया। अब हम जो सुधार ला रहे हैं, वह टिकाऊ तरीके से 24x7बिजली को सुनिश्चित करेगा।

इसका मतलब है कि (DISCOMS) (वितरण कंपनियों को (बिजली की आपूर्ति करनी चाहिए और बिजली उपभोक्ताओं से पैसा इकट्ठा करने में सक्षम होना चाहिए। कोई भी राज्य सरकार सब्सिडी देने के लिए स्वतंत्र है लेकिन सरकार डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर के जरिए सब्सिडी देने की वकालत कर रही है क्योंकि तब उपभोक्ता एक जिम्मेदार उपभोक्ता होगा। आप उसे पैसे देते हैं और अगर खपत कम होती है, तो वह पैसे बचाएगा।

पावर टैरिफ पॉलिसी - गांवों में लगभग 2.7 करोड़ उपभोक्ताओं के साथ, मांग 185 GW को छू रही है, जबकि शिखर स्तर लगभग 170 GW हुआ करता था। जब हम गांवों के आसपास जाते हैं तो हम टीवी, फ्रिज, ऐ .सी.जैसे उपकरणों का उपयोग करते हुए लोगों को देखते हैं।

मांग उठती रहेगी। सरकार कह रही है कि हमें उपभोक्ता अधिकारों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। एक उपभोक्ता जो भुगतान करने के लिए बाध्य है, जो DISCOM की वास्तविक लागत से ज़्यादा नहीं होनी चाहिए।

यदि कोई DISCOM रू / 3.यूनिट के हिसाब से बिजली प्राप्त करने में सक्षम है और व्हीलिंग शुल्क और नेटवर्क ट्रांसमिशन की लागत रु 1 .है, तो आपूर्ति की औसत लागत राज्य पर निर्भर करता है। व्यक्तिगत उपभोक्ता को इससे अधिक भुगतान करने के लिए नहीं कहा जाना चाहिए। सरकार जो कह रही है वह यह है कि आप अपने सभी घाटे से गुजर सकते हैं, सरकार ने इसे टैरिफ नीति में डाल दिया है।

टैरिफ, कुल के 15% से अधिक नहीं होना चाहिए। एक और बात हम बंडलिंग में भी ला रहे हैं, इसका मतलब है कि उत्पादन की कंपनी अक्षय ऊर्जा को तापीय ऊर्जा के साथ मिला कर आपूर्ति कर सकती है। इससे कीमत में कमी आएगी क्योंकि अक्षय ऊर्जा की कीमतें सस्ती हैं। DISCOMs और GENCOs के लिए कोई प्रणाली मौजूद नहीं है, इसलिए उपभोक्ता अधिकार महत्वपूर्ण हैं।

आप लोडशेडिंग नहीं कर सकते-, आपको जुर्माना देना होगा। यदि आप सेवा प्रदान करने में देरी करते हैं, तो दंड होना चाहिए। सरकार उपभोक्ता अधिकारों की सूची लिखने के लिए प्राधिकरण को सशक्त कर रही है और अधिकारों के किसी भी उल्लंघन का अर्थ DISCOMS को दंड देना होगा। प्राधिकरण नियामकों के मंच के साथ चर्चा करने के बाद दिशानिर्देश लिखेगा। यह एक गतिशील चीज होगी, हर साल नियामक दंड दर तय करेगा।

ग्रामीण क्षेत्रों की किसान उर्जा सुरक्षा योजना महाभियान(KUSUM)

इस योजना का उद्देश्य किसानों द्वारा सौर ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देना है। जिसे कैबिनेट ने मंजूरी दे दी है। योजना खेल परिवर्तक है और कई किसानों को कई गुणा की आय देगा । किसान अपनी बंजर भूमि का उपयोग कर सकता है जो कि वर्तमान में परती पड़ी है और उस पर लगभग 1 मेगावाट सौर परियोजना स्थापित करेगा और सरकार उस बिजली को खरीदेगी जिसके माध्यम से उसे एक बड़ी आय प्राप्त होगी ।

इसके अलावा, वर्तमान में किसान डीजल से चलने वाली सिंचाई प्रणालियों का उपयोग कर रहे हैं, जो महंगे हैं इसलिए DDGY योजना के तहत सरकार ने राज्यों को अलग फीडर स्थापित करने के लिए पैसा दिया है ताकि सरकार सभी नलकूपों को सक्रिय कर सकें।

DISCOM की सहायता के लिए एक नई योजना बनाई थी। क्या यह UJWAL DISCOM Assurance Yojana (UDAY) का विस्तार होगा।

सरकार एक ऐसी योजना लेकर आ रही हैं जहां हम राज्यों को उनके मुद्दों को कम करने में मदद करेंगे। UDAY के तहत सरकार ने नुकसान में कमी का अनुमान लगाया। आज घाटा 20 प्रतिशत से घटकर लगभग 18.2 प्रतिशत हो गया है और अब इसका लक्ष्य इसे 15 प्रतिशत तक ले जाना है। लेकिन सरकार एक नए UDAY के साथ काम करने वाली है कि जहां सरकार यह सुनिश्चित करेगी कि वित्तीय सहायता भी होगी और बिजली की लागत भी वसूल की जाए।

संगीता श्रीवास्तव
प्रमुख प्रबंधक(राजभाषा), इरेडा

रोमियो

गोल सा चेहरा चमकती आंखे
मुलायम मेरे और कोमल सा एहसास
मैं तो आ गया हूं इस रूप में
इस संसार में
जाने कौन हो तुम जो मुझे लेकर जा रहे हो
दूर मेरी माँ बाप की दुनिया से जिन्हें मैं जानता भी नहीं
तुमने मुझे पहला प्यार पहला दुलार दिया
माँ के आँचल और बाप की मौजूदगी का एहसास दिया
आज से अब मैं जुड़ना शुरू हुआ हूँ
तुमसे, दीदी, भैया और सब के दुलार से
मैं छोटा हूँ ज्यादा कुछ तो
समझ नहीं पाता हूँ पर जब भी
तुम मुझे मेरा अपना होने का
एहसास देते हैं
तो मैं खुशी से पागल हो जाता हूँ
तुम्हे कैसे ना कैसे बताने की
कोशिश करता हूँ तू मेरे हो
हो और मैं तुम्हारा
तुम्हारे साथ मैं बड़ा होता जाऊँगा
पर इंसान से ज्यादा तुम्हे
प्यार करके दिखाऊँगा
इंसान कभी-कभी प्यार के मतलब
भूल जाता है
पर मैं क्योंकि वो हूँ जो अपनी ईमानदारी
वफ़ादारी के लिए हमेशा से जाना जाता हूँ
तुम्हारे प्यार और एहसान
की ये दुनिया मैं कभी ना
भुला पाऊंगा
तुम्हारा हूँ तुम्हारा ही रहूंगा ये
मैं करके दिखाऊँगा

oooooooooo

मुंशी प्रेमचंद की यह दिल को छू जाने वाली कविता एक सबक का पाठ पढ़ाती है।

ख्वाहिश नहीं मुझे
मशहूर होने की,
आप मुझे पहचानते हो
बस इतना ही काफी है।

अच्छे ने अच्छा और,
बुरे ने बुरा जाना मुझे,
क्यों की जिसकी जितनी जरूरत थी
उसने उतना ही पहचाना मुझे।

जिन्दगी का फलसफा भी
कितना अजीब है,
शामें कटती नहीं और
साल गुजरते चले जा रहें है।

एक अजीब सी
दौड है ये जिन्दगी,
जीत जाओ तो कई
अपने पीछे छूट जाते हैं और
हार जाओ तो
अपने ही पीछे छोड़ जाते हैं।

ऐसा नहीं की मुझमें
कोई ऐब नहीं है,
पर सच कहता हूँ
मुझमें कोई फरेब नहीं है।

जल जाते है मेरे अंदाज से
मेरे दुश्मन,
क्योंकि एक मुद्दत से मैंने न मोहब्बत
बदली और न दोस्त बदले हैं।

एक घडी खरीदकर
हाथ मे क्या बांध ली
वक्त पीछे ही
पड़ गया मेरे।

बैठ जाता हूँ,
मिट्टी पे अकसर,
क्यूंकि मुझे अपनी
औकात अच्छी लगती है।

.....

मैंने समंदर से
सीखा है जीने का सलीका,
चुपचाप से बहना और
अपनी मौज मे रहना ।

सोचा था घर बना कर
बैठुंगा सुकून से,
पर घर की जरूरतों ने
मुसाफिर बना डाला मुझे।

सुकून की बात मत कर
ऐ गालिब,
बचपन वाला इतवार
अब नहीं आता।

जीवन की भाग दौड मे
क्यूँ वक्त के साथ रंगत खो जाती है ?
हँसती- खेलती जिन्दगी भी
आम हो जाती है।

एक सवेरा था
जब हँसकर उठते थे हम,
और आज कई बार बिना मुस्कुराये
ही शाम हो जाती है।

कितने दूर निकल गए
रिश्तों को निभाते निभाते,
खुद को खो दिया हम ने
अपनों को पाते पाते।

लोग केहते हैं
हम मुस्कुराते बहुत है,
और हम थक गए
दर्द छुपाते छुपाते।

खुश हूँ और सबको
खुश रखता हूँ,
लापरवाह हूँ फिर भी
सब की परवाह करता हूँ।

मालूम है
कोई मोल नहीं है मेरा फिर भी
कुछ अनमोल लोगों से,
रिश्ता रखता हूँ।

संकलन - नरेश वर्मा, उप महा प्रबन्धक, इरेडा

मनीष चन्द्र
मुख्य प्रबंधक (विधि), इरेडा

“बुढ़ापा”

खामोशी की ज़ुबा गर हो
हर तरफ शोर न मगर हो,
नम आखों की ये खामोशी
बन कर सैलाब उमड़ता जो।
तपिश मे सँजोया दो एक पल
कि ढके हो नंगे पाव, ठंडी रेत में,
न कर शोर अब बस खामोश रह
ये मंजर, पल रेत हो जाएगा।
है चाहत की ये हद अब
रिश्ते न करें आघात अब,
कब वक़्त था, अपनी हद में
शोर में, स्नेह कहाँ पनप पायेगा ।
ऐ जमाना ! नीचे गिरे सूखे पत्तों पर
अदब से चल और शोर न कर,
तूने कभी कड़ी दोपहरी धूप में
इनमें ही पनाह पाई थी ।

°°°°°°°°°°

सरबजीत कौर
उप प्रबन्धक (मा सं), इरेडा

बेटी है अभिमान

रंग बिरंगे सपनों से करती रोशन जहां,
माता पिता को देकर प्यारी सी पहचान!
रखती अपनों का मान सम्मान,
कर देती अपनी खुशियां कुर्बान!!
दोस्तों, हम समझें, साथ दें उसका,
ताकि बेटी की हो ऊँची उड़ान!!!

सब रिश्तों से है यह रिश्ता अनमोल,
बोझ समझकर बेटी को न दें हम तोल!
पंख देकर उसे देखें हम भी, बेटा बेटी समान,
अक्सर पा रहे उसे बनती हुई देश की शान!!

शिक्षिका, खिलाड़ी, चिकित्सक या पायलट बनती,
हर क्षेत्र में भरपूर तरक्की करती!
घर परिवार पर भी देती विशेष ध्यान,
विश्वस्तर पर उसकी कीर्ति महान!!
कुल का दीपक बनती,आने वाले कल की नींव रखती,
हमारी बेटी हमारा अभिमान बनती!!!

°°°°°°°°°°

महिका हर्षल
माउंट कार्मल स्कूल
छठी कक्षा

शिंचैन

जैसे ही खत्म होता है मेरा स्कूल,
टी वी चलाकर अपना दिमाग रखती हूँ कूल।

हंस हंसकर बढ़ाती हूँ अपना खून,
जब देखती हूँ अपना मनपसंद कार्टून।

जिस कार्टून की हूँ मे फैन,
नाम है उसका शिंचैन।

पाँच साल का है बड़ा मासूम,
पर मचा रखी है उसने पूरी धूम।

उसकी छोटी बहन है बहुत प्यारी,
नाम है उसका हिमावारी।

शिंचैन के कुत्ते का नाम है शिरो,
उसको लेकर साथ अपने शिंचैन बनता है हीरो।

नैनी, कसामा, मसाओ वो हैं दोस्त उसके पक्के,
पर शिंचैन की हरकत से रहते हक्के बक्के।

मिष्ठी नोहारा, शिंचैन की मोम है मजेदार,
सेल मे सबकुछ लाएगी जाके बाज़ार।

मिस्टर हेरोइनी है उसके डेड सीधे साधे,
ऑफिस जाने के लिए रहते वो हमेशा भागे।

योषिनागा टीचर को लगता है शिंचैन से डर,
शिंचैन को देखकर वह भाग जाती है घर।

कुल मिलाकर शिंचैन हर बचपन की एक कहानी है,
इसलिए सारी दुनिया शिंचैन की दीवानी हैं।

°°°°°°°°°°

हीरा वल्लभ शर्मा
सहायक महाप्रबंधक कार्मिक-नगर, शिक्षा एवं हिंदी,
दुर्गापुर इस्पात संयंत्र, दुर्गापुर

मेरा विज़न – भ्रष्टाचार मुक्त भारत

भ्रष्टाचार अर्थात भ्रष्ट + आचार। भ्रष्ट यानी बुरा या बिगड़ा हुआ तथा आचार का मतलब है आचरण। अर्थात भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है वह आचरण जो किसी भी प्रकार से अनैतिक और अनुचित हो। आम तौर पर सरकारी सत्ता और संसाधनों के निजी फ़ायदे के लिए किये जाने वाले बेजा इस्तेमाल को भ्रष्टाचार की संज्ञा दी जाती है। एक दूसरी और अधिक व्यापक परिभाषा यह है कि निजी या सार्वजनिक जीवन के किसी भी स्थापित और स्वीकार्य मानक का जब चोरी-छिपे उल्लंघन किया जाता है तो वह भ्रष्टाचार कहलाता है। विभिन्न मानकों और देशकाल के हिसाब से भी इसमें तब्दीलियाँ होती रहती है।

भ्रष्टाचार पर अपनी बात को आगे बढ़ाने से पहले कुछ पंक्तियां साझा करना चाहूंगा –

इस देश की है बीमारी, ये भूखे भ्रष्टाचारी,
जिस थाली में खाना खाते, ये छेद उसी में करते है।
धरती माँ का सौदा कर, उसको भी नोच खाते ये,
इस देश की है बीमारी, ये भूखे भ्रष्टाचारी॥

भ्रष्टाचार का मुद्दा एक ऐसा प्रश्न है जिसके कारण कई बार न केवल सरकारें बदल जाती हैं, बल्कि यह बहुत बड़े-बड़े ऐतिहासिक परिवर्तनों का वाहक भी रहा है। रोमन कैथलिक चर्च द्वारा अनुग्रह के बदले शुल्क लेने की प्रथा को मार्टिन लूथर द्वारा भ्रष्टाचार की संज्ञा दी गयी थी। इसके ख़िलाफ़ किये गये धार्मिक संघर्ष से ईसाई धर्म में अनेक सुधार निकले। परिणामस्वरूप प्रोटेस्टेंट मत का जन्म हुआ। इस ऐतिहासिक परिवर्तन से धर्म-निरपेक्षतावाद)secularism) के सूत्रीकरण का आधार तैयार हुआ।

भारत में भ्रष्टाचार का इतिहास बहुत पुराना है। भारत की आजादी के पूर्व अंग्रेज़ों ने सुविधाएं प्राप्त करने के लिए भारत के सम्पन्न लोगों को सुविधास्वरूप धन देना प्रारंभ किया। राजे-रजवाड़े और साहूकारों को धन देकर उनसे वे सब प्राप्त कर लेते थे जो उन्हे चाहिए था। अंग्रेज भारत के रईसों को धन देकर अपने ही देश के साथ गद्दारी करने के लिए कहा करते थे और ये रईस ऐसा ही करते थे। यह भ्रष्टाचार वहीं से प्रारम्भ हुआ और तब से आज तक लगातार चलते हुए फल फूल रहा है।

आज भी आर्थिक विकास में बाधक विभिन्न कसौटियों में एक कसौटी भ्रष्टाचार की है। सरकार भ्रष्ट हो तो जनता की ऊर्जा भटक जाती है। देश की पूंजी का रिसाव हो जाता है। यहां तक कि भ्रष्ट अधिकारी और नेता धन को देश के बाहर भेजकर उसे सिस्टम से अलग कर देते हैं।

भ्रष्टाचार से व्यक्ति सार्वजनिक संपत्ति, शक्ति और सत्ता का गलत इस्तेमाल अपनी आत्म-संतुष्टि और निजी स्वार्थ की प्राप्ति के लिये करता है। इसमें सरकारी नियम-कानूनों की धज्जियाँ उड़ाकर फायदा पाने की कोशिश होती है। आज हम देखते हैं कि भ्रष्टाचार की जड़े समाज में गहराई से व्याप्त हो चुकी है और लगातार फैल रही है। ये कैंसर जैसी बीमारी की तरह है जो बिना इलाज के खत्म नहीं होगी। इसका एक सामान्य रूप पैसा और उपहार लेकर काम करना दिखाई देता है। कुछ लोग अपने फायदे के लिये दूसरों के पैसों का गलत इस्तेमाल करते हैं। 'ट्रान्सपेरेन्सी इंटरनेशनल' द्वारा बनाई गयी रैंकिंग में अमरीका को19 वें स्थान पर रखा गया है जबकि चीन को79 वें तथा भारत को84 वां स्थान दिया गया

हमारे देश में हालांकि भ्रष्टाचार को रोकने के लिए कई सख्त कानून हैं जिनमें मनी लॉन्ड्रिंग अधिनियम, भारतीय दंड संहिता 1860 और भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 आदि लेकिन इन कानूनों के ठोस क्रियान्वयन में कहीं न कहीं कमी है। इसके चलते जो धन गरीब लोगों के उत्थान के लिए इस्तेमाल किया जाना चाहिए वह कर्ताधर्ताओं द्वारा अपने इस्तेमाल के लिए रख लिया जाता है। इसके अतिरिक्त, अक्सर यह देखा जाता है कि जो लोग समृद्ध नहीं हैं और सत्ता में बैठे लोगों को रिश्वत नहीं दे सकते वे अपना काम नहीं करवा पाते हैं इसलिए उनकी काम की फ़ाइल कार्रवाई के बजाए धूल फांकने लगती है। जाहिर है किसी भी बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था में तब तक गिरावट आती जाएगी जब तक भ्रष्ट अधिकारियों का रुतबा बना रहेगा।

पिछले कुछ दशकों में यह बात कई बार दोहरायी जा चुकी है कि देश में जनकल्याण की योजनाओं पर खर्च होनेवाली बड़ी राशि भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाती है, जिससे लक्षित समूहों को इसका पर्याप्त लाभ नहीं मिल पाता है .इस लिहाज से माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने सही ही कहा है कि 'वंचितों, गरीबों और किसानों को उनके अधिकार दिये जा सकते हैं, युवाओं को आत्मनिर्भर और महिलाओं को सशक्त बनाया जा सकता है, लेकिन इसके लिए भ्रष्टाचार से निपटना होगा।' केंद्रीय जांच एजेंसी सीबीआइ की ओर से नयी दिल्ली में बुधवार को आयोजित छठे 'ग्लोबल फोकल प्वाइंट कॉन्फ्रेंस ऑन एसेट रिकवरी' का उद्घाटन करते हुए हमारे प्रधानमंत्री जी ने कहा कि उनकी सरकार भ्रष्टाचार से कड़ाई से निपटने के लिए प्रतिबद्ध है और अफसरशाही को बेहतर बनाने का प्रयास कर रही है।

याद करें तो सत्ता में आने के बाद से पहले उन्होंने ईमानदार भारत के लिए 'मिनिमम गवर्नमेंट एंड मैक्सिमम गवर्नेंस' का लोकप्रिय नारा दिया था। इससे आशा की किरण जगती है कि नयी सरकार के कार्यकाल में मोदी सरकार पर भ्रष्टाचार का कोई बड़ा आरोप नहीं लगा है। यहां माननीय प्रधानमंत्री माननीय मोदी जी की कही एक बात को उद्धत करना चाहूँगा " – आज भी देश में छुआछूत है, भ्रष्टाचार है, कालाधन है, अशिक्षा है, कुपोषण है। इन सभी बुराइयों को खत्म करने के लिए देश के युवा को अपनी शक्ति झोंकनी होगी। अभी कुछ दिनों पहले सरकार ने कालेधन और भ्रष्टाचार के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। इस कार्रवाई को जितना समर्थन मेरे नौजवान दोस्तों ने दिया है, वो इस बात का सबूत है कि समाज में व्याप्त बुराई को मिटाने की आप सभी में कितनी जबरदस्त इच्छाशक्ति है"।

दुनिया के कई देशों का उदाहरण हमारे सामने है, जिस समाज में भ्रष्टाचार कम होता है, वह अधिक उत्पादक एवं रचनात्मक बन जाता है, जबकि जहां भ्रष्टाचार बढ़ता है, वहां गरीबी और असमानता की खाई भी बढ़ती जाती है। जाहिर है, विकास की राह पर तेजी से दौड़ने को आतुर भारतीय अर्थव्यवस्था की राह से भ्रष्टाचार का अवरोधक हटा कर ही सवा सौ करोड़ देशवासियों के जीवन में खुशहाली लायी जा सकती है। उम्मीद इसलिए भी बढ़ रही कि नयी सरकार 'भ्रष्टाचार मुक्त भारत' के सपने को पूरा करने की दिशा में निरंतर कारगर कदम उठा रही है।

भ्रष्टाचार मुक्त भारत कैसे?

- माननीय एपीजे_अब्दुल_कलाम का कहना था –**"अगर किसी देश को भ्रष्टाचार – मुक्त और सुन्दर-मन वाले लोगों का देश बनाना है तो , मेरा दृढ़तापूर्वक मानना है कि समाज के तीन प्रमुख सदस्य ये कर सकते हैं .पिता, माता और गुरु। "**जाहिर है शुरूआत घर से ही होती है। जब कोई पिता बच्चे से कहता है कि जाओ अंकल से कह दो की पापा घर पे नहीं हैं...तो वो जाने-अनजाने अपने बच्चे के मन में भ्रष्टाचार का बीज बो रहा होता है। जब माँ अपने बच्चे की गलती पर पर्दा डाल कर दूसरे के बच्चे को दोष दे रही होती है तो वो भी अपने बच्चे को गलत काम करने के लिए बढ़ावा दे रही होती है। माता-पिता और शिक्षक आज जो करते हैं उससे कल के भारत का निर्माण होता है इसलिए बेहद ज़रूरी हो जाता है कि वे बच्चों को उच्चतम नैतिक शिक्षा का पाठ पढाएं और इस पाठ को पढ़ाने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि वे उनके सामने कभी ऐसा आचरण न करें जो कहीं से भी गलत या अनैतिक आचार का समर्थन करता हो।
- चूँकि भ्रष्टाचार बस कुछ लोगो तक सीमित नहीं है और इसमें कोई भी लिप्त हो सकता है इसलिए हमें निगरानी और संतुलन का एक ऐसा सिस्टम बनाना होगा जहाँ पहले से तयशुदा नियमों और प्रणालियों की मदद से चीजें की जा सकें और किसी व्यक्ति विशेष की सोच को हावी होने से बचा जा सके। इसके लिए टेक्नोलॉजी का सही इस्तेमाल कारगर सिद्ध हो सकता है। हम उपलब्ध टेक्नोलॉजियों के वाजिब इस्तेमाल से भी भ्रष्टाचार को कम कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर ट्रैफिक नियमों का ठीक से पालन हो रहा है, यह सुनिश्चित करने के लिए हाई स्पीड कैमरों का प्रयोग किया जा सकता है और अगर कोई नियम तोड़ता है तो उसे सिस्टम अपने आप ही फाइन स्लिप भेज सकता है। इससे लोग सचेत तो होंगे ही, साथ में लाखों ट्रक आदि वालों और आम लोगों का शोषण भी कम हो जाएगा। हालांकि इतने बड़े देश में एकाएक यह सब इतना आसान नहीं है, पर धीरे-धीरे ही सही इस दिशा में आगे बढ़ा तो जा ही सकता है।
- नियम-क़ानूनों में पेचीदगियां कम होनी चाहिए। ये जितने पेचीदे होते हैं, आम आदमी को उन्हें समझने में उतनी ही दिक्कत होती है और उनका अनुपालन भी उतना ही मुश्किल हो जाता है। और, इसी बात का फायदा उठा कर कुछ सरकारी अफसर और कर्मचारी लोगों का शोषण करते हैं। हाल ही में सरकार ने तमाम टैक्स ढांचों को हटा कर एक टैक्स यानी जीएसटी (GST) की शुरुआत की है जो कि इस दिशा में एक अच्छा कदम है। धीरे-धीरे हमें और भी बहुत से क़ानूनों को आसान, सहज और लोगों के अनुकूल बनाना होगा। इससे भ्रष्टाचार को कम करने में निश्चित ही मदद मिलेगी।

- चुनावों में साफ सुथरी छबि के लोगों को आगे लाना चाहिए। निहायत ही जरूरी है कि आपराधिक छवि और दागदार लोगों को सक्रिय राजनीति में आने से रोका जाए। चुनाव आयोग को चाहिए कि वो किसी भी हालत में खराब छबि वाले लोगों के चुनाव लड़ने में पाबंदी लगाए। उस स्थिति में भी जब कि किसी के खिलाफ कोई भी मामला कोर्ट में चल रहा हो। चुनावी खर्चे की जो सीमा निर्धारित की गयी है उस पर कड़ी नज़र रखी जानी चाहिए और सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि कोई उससे अधिक खर्च ना करे । जब साफ-सुथरी छबि के लोग संसद या विधानसभा में पहुँचेंगे तो भ्रष्टाचार ज़रूर कम होगा।
- देखा गया है कि सरकारी कामकाज के लिए जारी की जानेवाली निविदाओं में भारी गड़बड़ी की संभावना होती है। अपने स्वार्थ के लिए इसमें बहुत हेरफेर की जा सकती है। अच्छी बात है कि इसमें ऑनलाइन बिडिंग का सिस्टम लाया जा रहा है। निश्चित रूप से भ्रष्टाचार को रोकने में इससे अच्छी मदद मिल रही है। सरकारी कामकाज जितनी पारदर्शिता से होगा उसके परिणाम उतने ही अच्छे मिलेंगे।
- सरकार को ज्यादातर लोक कार्यों के लिए 'टर्न अराउण्ड समय') TAT (निर्धारित करना चाहिए अर्थात वो समय जितने में कि तय काम अनिवार्यतः पूरा हो जाये और इसकी जानकारी संबंधित विभाग की नोटिस बोर्ड्स पर दी जानी चाहिए। इसके लिए जिम्मेदारी तय की जानी जरूरी है। अगर समय पर काम पूरा न हो तो संबंधित अधिकारी को इसके लिए उत्तरदायी ठहराते हुए ठोस कार्रवाई की जानी चाहिए। ऐसा होने पर बिना वजह किसी काम को विलंब करके पैसे ऐंठने की प्रवृत्ति पर रोक लगेगी और भ्रष्टाचार कम होगा।
- अक्सर देखा गया है कि ये बात लोगों के दिमाग में घर कर गयी है कि सरकारी नौकरी शत-प्रतिशत सुरक्षित है। मतलब एक बार सरकारी नौकरी लगी तो कोई आपको निकाल नहीं सकता है !अधिकांशतः देखा गया है कि, कोई यदि भ्रष्टाचार करते पकड़ा भी जाता है तो अक्सर उसे कुछ समय के लिए सस्पेंड कर दिया जाता है और बाद में हेरफेर करके वह फिर से नौकरी में वापस आ जाता है और भ्रष्टाचार का चक्र चलता रहता है !निस्संदेह इस स्थिति में बदलाव लाने की नितांत आवश्यकता है। भ्रष्ट व्यक्ति अपने फायदे के लिए करोड़ों लोगों को नुकसान पहुंचाता है। खराब सड़के, नकली दवाइयां और खाने-पीने की चीजों में नकली मिलावट से लोगों की जान तक चली जाती है। इसलिए बहुत ज़रूरी है कि इन सबके लिए ऐसे कडे से कड़े कानून बनाए जाने चाहिए कि दोषी लोग बिलकुल न बच सकें और उन्हें सख्त से सख्त सजा मिलनी चाहिए।
- सरकारी प्रयत्न भ्रष्टाचार रोकने का पूर्ण समाधान नहीं है। हाँ, ये भी कुछ हद तक इस समस्या को दूर करने में सहायक हो सकते हैं। दरअसल, भ्रष्टाचार एक सामाजिक समस्या है। यह समाज के चरित्र और स्वभाव से संबंध रखती है। जब तक समाज का चरित्र उत्कृष्ट नहीं होगा और जन-स्वभाव उत्तम नहीं बनेगा, तब तक भ्रष्टाचार की जड़ नहीं मिट सकती। लोगों को चरित्र निर्माण की दिशा में प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। ऐसा गहन संपर्क जागरूकता अभियानों और विभिन्न कार्यक्रमों के ज़रिये किया जा सकता है।**जागरूकता अभियानों के ज़रिये जन – जन में इस बात का संचार करना होगा कि – भ्रष्टाचार के पापी बीज को पनपने न देंगे, देश के दामन पर अब दाग हम लगने न देंगे।** निस्संदेह, भ्रष्टाचार के विरोध में राष्ट्रीय जन-जागृति ही राष्ट्र को भ्रष्टाचार जैसी कुरीतियों से मुक्त करा सकती है।

- भारत में अपराधियों के बीच डर कम होने का एक बड़ा कारण है यहाँ की बेहद धीमी न्याय प्रक्रिया । अपराधी जानता है कि अगर वो पकड़ा भी जाता है तो उसे सजा मिलने में दशकों बीत जायेंगे, इसलिए वो और भी निडर होकर अपराध करता है। फ़ास्ट ट्रैक कोर्ट्स और टेक्नोलॉजी के प्रयोग से इस प्रक्रिया को जल्द से जल्द तेज बनाया जाना चाहिए।

- कल्याणकारी योजनाओं के कार्यान्वयन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। सरकारी विद्यालयों एवं अस्पतालों का बेहाल सर्वविदित है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली में 40 प्रतिशत माल का रिसाव होता रहा है। मनरेगा जैसी योजनाओं को अधिक कारगर बनाने के लिए ठोस और ईमानदार प्रयासों की जरूरत है। भ्रष्टाचार और असमानता की समस्याओं को रोकने में हम जब तक कामयाब न होंगे सफलता हमसे दूर रहेगी। और, यह हमारी महाशक्ति बनने के मार्ग में रोड़ा बनी रहेगी।

भ्रष्टाचार मुक्त भारत आज हर देशवासी का सपना है क्योंकि भारत की खुशहाली के लिए यह निहायत ही ज़रूरी है कि देश से भ्रष्टाचार को जड से समाप्त किया जाए। इसलिए आवश्यक है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ हम सब एकजुट होएं। इसमें कोई संदेह नहीं कि भारत में संसाधनों की कमी नहीं है। भारत में कुछ कर गुजरने वाले लोगों की भी कमी नहीं है। भारत के पास वह सब कुछ है जो उसे विश्व में महाशक्ति बना सकता है। परन्तु हम भ्रष्टाचार की वजह से इस से दूर होते जा रहे है। आज देश को महाशक्ति बनाने के लिये एक महाक्रान्ति की जरुरत है, क्योकि बदलाव के लिये महाक्रान्ति की ही आवश्यकता होती है । हमें मिलजुल कर किसी भी कीमत पर भष्टाचार को रोकना होगा। छोटी छोटी शुरुआत ही बडी क्रांति का रूप लेती है। आज आज़ाद भारत को एक बार फिर क्रांतिकारी सोच और देशभक्तों की ज़रूरत है...खादी का कुर्ता पहन लेने और जय हिंद बोल देने मात्र से कोई देशभक्त नहीं बन जाता... देशभक्त वो होता है जिसमें देश के लिए कुछ न कुछ कर गुजरने का जज़्बा होता है। यह जज़्बा हम अपने अंदर, अपने परिवार में, अपने कार्यालय में, अपने कमकाज में, अपने व्यवहार में, अपने इर्दगिर्द हर उस चीज में पैदा कर सकते हैं जिनसे नित हमारा साबका पडता है। ...और सबसे पहले हमें खुद ऐसा देशभक्त और पारदर्शी बनना होगा...तब ही मानव सभ्यता के लिए कभी सबसे महान रहा हमारा भारत फिर से दुनिया का महानतम देश बन पायेगा और हम गर्व के साथ कह – **मेरा भारत महान !**

गिरीश चन्द्र शर्मा, उप प्रबन्धक(त)/हिन्दी समिति –सदस्य ,
इंडियन ऑइल कार्पोरेशन लिमिटेड, फ़रीदाबाद
(संकलन)

“चैन से मर भी नहीं सकती“ - ‘एक गृहणी की कलम से’

शाम से ही मेरे सीने में बायीं तरफ़ हल्का दर्द था। पर इतने दर्द को तो औरतें चाय में ही घोलकर पी जाती हैं। मैंने भी यही सोचा कि शायद कोई झटका आया होगा और रात के खाने की तैयारी में लग गई।

किचन निपटाकर सोने को आई तो पति को बताया। पति ने दर्द की दवा लेकर आराम करने को कहा।

साथ ही ज़्यादा काम करने की बात बोलकर मीठी डाँट भी लगाई।

देर रात को अचानक फिर दर्द बढ़ गया था। साँस लेने में भी तकलीफ़ सी होने लगी थी। “! कहीं ये हार्ट अटैक तो नहीं“ये विचार मन में आते ही मैं पसीने से भर उठी।

“हे भगवानमेथी तो साफ़ ही नहीं किए-पालक !,मटर भी छिलने बाक़ी थे। ऊपर से फ़्रीज़ में मलाई का भगोना भी पूरा भरा रखा हुआ है,आज मक्खन निकाल लेना चाहिए था। अगर मर गई तो लोग कहेंगे कि कितना गंदा फ़्रीज़ कर रखा था। कपड़े भी प्रेस को नहीं डाले। चावल भी ख़त्म हो रहे हैं, आज बाज़ार जाकर राशन भर लेना चाहिए था। मेरे मर जाने के बाद जो लोग बारह दिनों तक यहाँ रहेंगे, उनके पास तो मेरे मिसमैनेजमेंट के कितने सारे क़िस्से होंगे।”

अब मैं सीने का दर्द भूलकर काल्पनिक अपमान के दर्द को महसूस करने लगी। प्लीज़ आज मत मारना। आज ना तो मैं तैयार हूँ और ना ही मेरा !नहीं भगवान“ *“घर।

यही प्रार्थना करते करते मैं गहरी-नींद में सो गई।

सुबह फिर गृहकार्य में लग गई।

oooooooooo

गोकुलनन्दा बेहेरा,
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
प्रमाण और प्रायोगिक संस्थान
चांदीपुर, ओडिशा

" कन्यादान " - 'एक पिता की कलम से'

(एक नयी सोच एक नयी पहल-सभी बेटियां के लिए)

पिता कन्यादान नहीं करूंगा जाओ -:,
मैं नहीं मानता इसे ,

क्योंकि मेरी बेटी कोई चीज़ नहीं ,जिसको दान में दे दूँ ;
मैं बांधता हूँ बेटी तुम्हें एक पवित्र बंधन में ,

पति के साथ मिलकर निभाना तुम ,
मैं तुम्हें अलविदा नहीं कह रहा ,

आज से तुम्हारे दो घर ,जब जी चाहे आना तुम ,
जहाँ जा रही हो ,खूब प्यार बरसाना तुम ,

सब को अपना बनाना तुम ,पर कभी भी
न मर मर के जीना ,न जी जी के मरना तुम ,

तुम अन्नपूर्णा , शक्ति , रति सब तुम ,
ज़िंदगी को भरपूर जीना तुम ,

न तुम बेचारी , न अबला ,
खुद को असहाय कभी न समझना तुम ,

मैं दान नहीं कर रहा तुम्हें ,
मोहब्बत के एक और बंधन में बाँध रहा हूँ ,
उसे बखूबी निभाना तुम .....

°°°°°°°°°°

(संकलन)

डॉ. ईश्वर सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक-राजभाषा
हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड, दिल्ली

प्रशंसा की शक्ति

आज मानव जीवन तनाव ,कुंठा ,ईर्ष्या और अवसाद से बुरी तरह ग्रस्त है। मनुष्य जंगलों से गांव ,गांव से नगर ,अभावों से समृद्धि और विपन्नता से सम्पन्नता की यात्रा पूरी कर रहा है किन्तु वह अंदर से उतना ही खाली ,उतना ही अकेला और हीनता से घिरा हुआ है जितना कि वह बाहरी दुनिया को इसके विपरीत दर्शाने का प्रयास करता है।

प्रश्न उठता है कि ऐसा क्यों है? अभावयुक्त जीवन में भी उसका जीवन जितना सहज ,जितना प्राकृतिक ,जितना सामाजिक और जितना मुक्त था आज उतना भी क्यों नहीं है? यदि विश्लेषण करेंगे तो हम पाएंगे कि समृद्धि और विकास के साथ साथ व्यक्ति आत्म-केंद्रित होता चला गया। उसके जीवन में सामाजिकता केवल दिखावे की चीज बनकर रह गई और वस्तुत :वह स्वयं में सिमट कर रह गया। यह प्रवृत्ति उस पर इस कदर हावी हो गई कि आज वह अनेक मामलों में ,समाज क्या ,अपने परिवार से भी खुला हुआ नहीं है और अंदर ही अंदर विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष कर रहा है। इस संघर्ष में उसका अकेलापन ही उसके जीवन में तनाव ,कुंठा ,ईर्ष्या और अवसाद को जन्म देने का मुख्य कारण है।

इसका दूसरा प्रमुख कारण है व्यक्ति द्वारा अपनी किलेबंदी कर लेना। वह एक झूठे और आधारहीन प्रभाव में स्वयं को बेहद महत्त्वपूर्ण मानने लगता है। वह चाहता है कि सब लोग उसके पास आएं ,उसकी राय मांगें और उसकी बात मानें अर्थात उसकी श्रेष्ठता को स्वीकार करें और ऐसा न होने पर' मैं इन चक्करों में नहीं पड़ता 'या' मैं इन बातों से कोई सरोकार नहीं रखता 'का रूख अपनाकर वह स्वयं को अकेला करता चला जाता है। इस दुनिया के पास इतना वक्त नहीं है कि वह अलग-थलग पड़ने वाले व्यक्ति को स्वयं से जोडने का प्रयास करे। परिणामस्वरूप यह व्यक्ति समाज से कटता चला जाता है तथा सामाजिक एवं मानसिक रूप से पूरी तरह अकेला हो जाता है और जीवन में सब कुछ होते हुए भी वह खुशी ,संतोष और शांति के लिए तरसता रहता है ,भटकता रहता है।

मैं ,उपरोक्त पृष्ठभूमि में ,जीवन में सराहना के मंत्र को अपनाने की बात करता हूं। ये जीवन और ये दुनिया बिल्कुल वैसी ही है जैसे कि हम स्वयं हैं। मुस्कुराते हुए व्यक्ति को हवाओं में संगीत सुनाई देता है रोते हुए व्यक्ति को हवाओं मे रूदन का स्वर सुनाई देता है। मैं जो कुछ इस दुनिया को देता हूं ,वही पलट कर मेरे पास आता है। यह भी स्मरण रहे कि व्यक्ति का नियंत्रण केवल अपने ऊपर है ,स्वयं के अतिरिक्त किसी पर नहीं। यह सोचना कि मैं किसी और पर नियंत्रण रखता हूं ,स्वयं को धोखे में रखने से अधिक कुछ नहीं है। जब मेरा नियंत्रण अपने अलावा किसी पर नहीं है तो परिवर्तन कहां हो सकता है? जब मेरे वश में न तो दुनिया है ,न समाज है ,न दूसरों की सोच है ,न परिस्थितियां हैं तो मैं बदल क्या सकता हूं? मतलब साफ है कि मैं केवल स्वयं को बदल सकता हूं और यदि मैंने स्वयं को बदल लिया तो मैं दुनिया में सचमुच बदलाव लाने की शुरूआत कर सकता हूं। इससे दुनिया तो बदलेगी ही ,मेरा जीवन भी बदल जाएगा ,क्योंकि ये जीवन वैसा ही है जैसी मेरी सोच है। हमारी सोच में अनेक बदलावों की आवश्यकता हो सकती है किन्तु मैं इस लेख में दूसरों की सराहना की बात करता हूं। यदि मैं दूसरों की सराहना के बारे में अपने दृष्टिकोण में व्यापक और सकारात्मक बदलाव ला सकूं तो निसंदेह मेरे अपने जीवन में गुणात्मक ,सकारात्मक और रचनात्मक बदलाव आएंगे।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी सराहना पसंद करता है ,किन्तु वह औरों की सराहना करना नहीं चाहता। यहां तक कि हम प्रशंसा योग्य कार्यों की भी प्रशंसा करने में हिचकिचाते हैं। ऐसा लगता है कि औरों की प्रशंसा करने से हम छोटे हो जाएंगे। दूसरों की श्रेष्ठता स्वीकार करने में हम बेहद संकोची हो जाते हैं। यही छोटी सोच हमारी किलेबंदी करती है। जबकि सच इससे बिल्कुल उलट है। जितना हम दूसरों के गुणों की प्रशंसा करेंगे उतना ही हमारे व्यक्तित्व को बौद्धिक ,सामाजिक ,मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक विस्तार मिलेगा। हम अपने से बाहर निकल कर ही व्यापकता प्राप्त कर सकते हैं:

जो अपने से बाहर निकला ,उसको सारा संसार मिला
जिसने मरना सीखा उसको ही जीने का अधिकार मिला

मुझे संत कबीरदास की ये पंक्तियां बरबस ही याद आती हैं-

कबीरा खड़ा बाजार में लिए लकुटिया हाथ
जो घर फूंके आपणा चले हमारे साथ

जब हमने अपने चारों ओर एक ऐसा वातावरण बना लिया है जिसमें हम अन्य व्यक्तियों की उपलब्धियों में कमियां निकालकर ,गुणों में अवगुण ढूंढकर और अच्छाई को बुराई साबित करके संतोष पाते हैं तो हम एक सहज ,सुखद ,संतोषप्रद दुनिया की कामना करने का अधिकार कहां रखते हैं? प्रश्न यह है कि मैं जैसी दुनिया और समाज चाहता हूं ,उसे पाने की दिशा में मेरा योगदान क्या है? यह तो मुझे स्वीकार करना ही पडेगा कि कोई भी सुधार स्वयं से शुरू होता है।

जब हम अपने आस-पास मौजूद लोगों के गुणों को देखने ,स्वीकार करने और उनकी सराहना करने लगेंगे तो हम अच्छाई को खाद देने का कार्य करेंगे ,हम अच्छाई को मजबूत करने का कार्य करेंगे। प्रत्येक व्यक्ति में अच्छाइयां हैं ,हमें बस उन्हें देखने के लिए अपने नजरिये को सकारात्मक बनाने की जरूरत है। यदि हम परिवार में अपने माता-पिता की अच्छाइयों को देखें और उनका बखान करें ,अपने जीवन साथी के त्याग को रेखांकित करें , बच्चों के प्यार को समझें उसकी सराहना करें तो परिवार का माहौल इतना मधुर हो जाएगा कि हमें अपना परिवार एक आदर्श परिवार लगने लगेगा। इसी प्रकार यदि हम अपने जानकारों और रिश्तेदारों में कमियां खोजने के बजाय उनकी खूबियों को देखें और उनके बारे में लोगों से चर्चा करें तो रिश्तेदारों के मध्य न केवल हम स्वयं लोकप्रिय हो जाएंगे अपितु सभी रिश्तेदारों के मध्य भी मधुर रिश्ते कायम हो जाएंगे। इसी प्रकार व्यक्ति से समूह ,समूह से समाज और समाज से दुनिया एक खूबसूरती को हासिल कर सकेगी। स्वयं पर लागू करके देखें तो पता चलता है कि जब हर ओर हमारी तारीफें हो रही होती हैं ,सब हमारे गुणों की चर्चा कर रहे होते हैं ,हर कोई हमसे मिलकर अच्छा अनुभव करता है तो हमें वह जगह कितनी हसीन और आकर्षक लगने लगती है। दिल करता है बस वक्त ठहर जाए और हम इसी पल और इसी जगह के होकर रह जाएं।

यदि हम ऐसा चाहते हैं तो क्या यह संभव है कि सारी दुनिया तो हमारा गुणगान करे और हम किसी का गुणगान न करें। यदि सभी ऐसा सोचने लगेंगे तो हमारे गुणों की प्रशंसा भी कैसे होगी। हम वही तो काटेंगे जो बो रहे हैं। फिर बबूल क्यों बोएं ,आम खाना चाहते हैं तो आम ही क्यों न बोएं और हम जानते हैं कि हमारा नियंत्रण केवल स्वयं पर है। किसी के गुणों की प्रशंसा करके हम उस व्यक्ति में तथा उस व्यक्ति के माध्यम से दुनिया में गुणों को स्थापित करने में एक रचनात्मक भूमिका निभाते हैं जबकि दूसरों में बुराइयां ढूंढकर तथा उनकी आलोचना करके हम स्वयं नकारात्मकता समेटे हुए समाज के लिए विध्वंसात्मक सामग्री बन जाते हैं।

हमें शांत चित्त होकर यह सोचना है कि हम कैसा जीवन और कैसा समाज चाहते हैं -एक प्राकृतिक ,सहज ,सुखद ,शांत ,रचनात्मक और सह-अस्तित्व की भावना से ओत प्रोत समाज जिसमें चारों ओर अच्छे इंसान हों जो हमें सहयोग करें ,हमें पसंद करें ,हमारा सम्मान करें या फिर एक कृत्रिम ,असहज ,अशांत ,दुर्भावनापूर्ण ,विनाशकारी समाज जिसमें बीमार प्रतिस्पर्धा से बंधे ऐसे लोगों से हम घिरे हों जिनमें स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए दूसरों को छोटा साबित करने की होड़ लगी हो ,जो सदैव हमारे मार्ग में अवरोध पैदा करें ,हमसे घृणा करें ,चेहरे पर मुस्कान लेकर अंदर से छल करने की फिराक में रहें। चुनाव हमें करना है और यदि हमारा विकल्प पहला है तो इसकी शुरूआत हमें स्वयं से करनी होगी। किसी की सराहना करने के लिए आवश्यक नहीं है कि वह व्यक्ति हर प्रकार से सराहना के योग्य हो। हमें प्रत्येक व्यक्ति के उस पक्ष को फोकस करना है जो सराहना के योग्य है और उस पक्ष की सराहना करने में कोई कंजूसी नहीं करनी है। इससे उस व्यक्ति के व्यक्तित्व के उस पक्ष को मजबूती मिलेगी और एक सकारात्मक और रचनात्मक समाज के निर्माण का श्रीगणेश होगा।

हिंदी के उच्चारण-स्थान और वर्णों का वर्गीकरण

उच्चारण-स्थान और वर्णों का वर्गीकरण

उच्चारण स्थान –			उदाहरण
1. कंठ से बोले जाने वाले	– कंठ्य	–	अ
2. तालु की सहायता से बोले जाने वाले	– तालव्य	–	च
3. मूर्धा की सहायता से बोले जाने वाले	– मूर्धन्य	–	ट
4. दाँतों की सहायता से बोले जाने वाले	– दंत्य	–	त
5. ओष्ठ की सहायता से बोले जाने वाले	– ओष्ठ्य	–	प, उ
6. कंठ और तालु दोनों की सहायता से बोले जाने वाले	– कंठ तालव्य	–	ए
7. कंठ और ओष्ठ दोनों की सहायता से बोले जाने वाले	– कंठोष्ठ्य	–	ओ
8. दाँतों और ओष्ठ की सहायता से बोले जाने वाले	– दंतोष्ठ्य	–	व
9. नासिका से बोले जाने वाले	– नासिक्य	–	अं

क्रम	वर्ण	उच्चारण	श्रेणी
1	अ आ क् ख् ग् घ् ङ् ह्	विसर्ग कंठ और जीभ का निचला भाग	कंठस्थ
2	इ ई च् छ् ज् झ् ञ् य् श्	तालु और जीभ	तालव्य
3	ऋ ट् ठ् ड् ढ् ण् ड़् ढ़ र् ष्	मूर्धा और जीभ	मूर्धन्य
4	त् थ् द् ध् न् ल् स्	दाँत और जीभ	दंत्य
5	उ ऊ प् फ् ब् भ् म्	दोनो होंठ	ओष्ठ्य
6	ए ऐ	कंठ तालु और जीभ	कंठतालव्य
7	ओ औ	दाँत जीभ और होंठ	कंठोष्ठ्य
8	व्	दाँत जीभ और होंठ	दंतोष

अंकिता ग्रुप्ता
उप प्रबन्धक (वित), इरेडा

उठो सोने वालों

उठो सोने वालों सवेरा हुआ है
वतन के फकीरों का फेरा हुआ है
उठो कि आशा पक्षी बन चहु ओर चह चहाती
उल्लासित भूमि पावन संग है लहलहाती
उठो कि निराशा निशां खो रही है
सुनहली सी पूरब दिशा हो रही है
उठो कि प्रकृति स्वदेश का जयघोष कहाती
केसरिया गगन , श्वेत बादल , हरियाली भूमि है इतराती
उठो कि यह नव निर्माण की बेला है
देश तुम्हारा अद्वितीय पर अकेला है
तुम्हें किस नींद- मोह ने घेरा हुआ है
उठो सोने वालों सवेरा हुआ है

°°°°°°°°°°

राजभाषा हिंदी से संबंधित बैठक

1. केन्द्रीय हिंदी समिति ।
2. संसदीय राजभाषा समिति ।
3. केन्द्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति ।
4. हिंदी सलाहकार समिति ।
5. राजभाषा कार्यान्वयन समिति ।
6. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति ।

1. **केन्द्रीय हिंदी समिति** - राजभाषा अधिनियम 1963 के 1967 में संशोधन के साथ ही सरकार ने केन्द्रीय हिंदी समिति के गठन का निर्णय लिया था । 5 सितम्बर 1967 को जारी किए गए संकल्प में कहा गया था कि यह समिति हिंदी के विकास और प्रसार के संबंध में भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों द्वारा किए जा रहे कार्यों तथा कार्यक्रमों का समन्वय करेगी । उसके बाद से इस समिति का समय-समय पर पुनर्गठन होता रहा है । हिंदी के संबंध में यह उच्चतम समिति है । इसके अध्यक्ष प्रधानमंत्री होते हैं । इसके सदस्यों में केन्द्रीय सरकार के 11 मंत्री, राज्यों के 8 मुख्य मंत्री, 7 सांसद तथा हिंदी के 10 विशिष्ट विद्वान शामिल हैं । सचिव राजभाषा विभाग और भारत सरकार के हिंदी सलाहकार इसके सदस्य सचिव के रूप में कार्य करते हैं । इस समिति की सिफारिशों को मंत्रिमंडल का निर्णय मान लिया जाता है ।

2. **संसदीय राजभाषा समिति** – संसदीय राजभाषा समिति का गठन राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 4 के लिंग्नुसार 1976 में किया गया था । समिति में 30 सदस्य होते हैं । 20 लोकसभा से 10 राज्य सभा से जो क्रमश: लोकसभा और राज्यसभा के सदस्यों द्वारा लिंगनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रणीय मत द्वारा निर्वाचित होते हैं । अत: इससे सभी राष्ट्रीय स्तर के राजनैतिक दलों और प्रमुख क्षेत्रीय दलों का प्रतिनिधित्व रहता है और वह मिली संसद का रूप धारण कर लेती है । इस समिति का कर्त्तव्य है कि संघ के राजकीय प्रयोजन के लिए हिंदी के प्रयोग में की गई प्रगति की समीक्षा करके सिफारिशों सहित राष्ट्रपति को रिपोर्ट देना । राष्ट्रपति इस समिति द्वारा दिए गए प्रतिवेदन को संसद के दोनों सदनों में रखवाता है और सभी राज्य सरकारो को भिजवाता है । परम्परानुसार भारत के गृहमंत्री इस समिति की अध्यक्षता करते रहे हैं ।

   वे इन संस्तुतियों पर समय-समय पर राष्ट्रपति जी के आदेश भी जारी हो चुके हैं । राजभाषा नीति के निर्धारण और कार्यान्वयन की दिशा में इस समिति का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक रहा है ।

3. गए मार्गदर्शी सिद्धांत के अनुसार किया जाना अपेक्षित है । **केन्द्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति -** यह समिति राजभाषा अधिनियम 1963 और राजभाषा नियम 1976 के उपबन्धों के अनुसार सरकारी प्रयोजनों के लिए हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग, केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के हिंदी प्रशिक्षण और हिंदी के कार्यान्वयन के संबंध में राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर जारी किए गए अनुदेशों के कार्यान्वयन का पुनरीक्षण करती है । और उसके अनुपालन में पाई गई कमियों और कठिनाइयों को दूर करने के लिए उपायों के बारे में विचार करती है । राजभाषा विभाग के सचिव इस समिति के अध्यक्ष और विभिन्न मंत्रालयों/विभागों की राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के निष्पक्ष इसके सदस्य होते हैं ।

4. **हिंदी सलाहकार समितियाँ –**

(1) **गठन और कार्य -** सरकार की राजभाषा नीति के सुचारू रूप से कार्यान्वयन के बारे में सलाह देने के उद्देश्य से व्यवस्था की गई । इसका गठन केन्द्रीय हिंदी समिति की सिफारिशों के आधार पर बनाये

केन्द्रीय हिंदी समिति में यह निर्णय लिया गया कि मौजूदा परिस्थितियों में मितव्ययता को ध्यान में रखते हुए इस समिति में गैर-सरकारी सदस्यों की संख्या नहीं होनी चाहिए । इनमें 2 सांसद लोकसभा से 2 राज्य सभा से 2 प्रतिनिधि संसदीय राजभाषा समिति से 1 अखिल भारतीय हिंदी स्वैच्छिक संगठन का प्रतिनिधि । इसके गठन/पुनर्गठन के प्रस्ताव के बारे में राजभाषा विभाग की औपचारिक सहमति संबंधित मंत्री के अंतिमअ आदेश देने से पहले ली जानी चाहिए ।

सदस्य संख्या 30- सदस्यों से अधिक नहीं होनी चाहिए ।

5. **राजभाषा कार्यान्वयन समिति -** संसदीय राजभाषा समिति के प्रतिवेदन में चौथे खण्ड के अधिकार में हर कार्यालय में एक राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन किया जाना चाहिए (जहाँ कम से कम 25 कर्मचारी कार्यरत हों) कार्यालयाध्यक्ष इसका अध्यक्ष होंगे । मंत्रालय में संयुक्त सचिव इसके अध्यक्ष होंगे ।

बैठकें- हर तिमाही में एक बैठक होनी चाहिए ।

6. **नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति -** जिन शहरों में केन्द्रीय सरकार के कम से कम 10 कार्यालय है, वहाँ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन अपरिहार्य है । इन समितियों के अध्यक्ष राजभाषा विभाग द्वारा नामित किये जाते हैं जो सामान्यत: नगर के वरिष्ठतम अधिकारी होते हैं ।

बैठकें- वर्ष में 2 दो बार होनी चाहिए ।

संगीता श्रीवास्तव
प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा), इरेडा

रोमेश कुमार गुप्ता
सहायक प्रबंधक वित्त एवं लेखा -, इरेडा

हिन्दी भाषा

हिन्दी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है भारत में । यह लगभग मिलियन देशी 182 वक्ताओं के साथ दुनिया की**चौथी** सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है । हिंदी लिखने के लिए देवनागिरी लिपि का उपयोग किया जाता है। भारत में, उत्तर भारत सहित कुछ अन्य स्थानों पर हिंदी व्यापक रूप से लिखी, बोली और समझी जाती है। पूर्व में किए गए एक सर्वेक्षण में पाया गया कि %45भारतीय हिंदी बोल सकते हैं।

हिंदी का सबसे सामान्य रूप हिंदुस्तानी के रूप में जाना जाता है । हिंदी भाषा, दक्षिण भारत की द्रविड़ भाषाओं के साथ साथ फारसी-, अरबी , तुर्की , अंग्रेजी और पुर्तगाली भाषाओं के शब्दों को भी समाहित करती हैं। हिंदी शब्द का प्रयोग मूल रूप से "सिंधु के पूर्व निवासियों" के संदर्भ में किया गया था जिसे शास्त्रीय फ़ारसी हिंदी से लिया गया था (ईरानी फ़ारसी हिंदी), जिसका अर्थ होता है **"भारतीय",** उचित संज्ञा हिंद भा")रत से। (""हिंदवी" नाम का इस्तेमाल अमीर खुसरो ने अपनी कविता में किया था ।

हिंदुस्तानी भाषा लगभग उर्दू , पाकिस्तान की आधिकारिक भाषा के समान है ; मुख्य अंतर यह है कि उर्दू अरबी वर्णमाला में लिखी गई है । हिंदी और उर्दू को एक ही भाषा माना जाता था जब तक कि पाकिस्तान भारत से अलग नहीं हो गया । हालाँकि, आज तक, दोनों भाषाएँ परस्पर साझादार हैं , जिसका अर्थ है कि उनके वक्ता एकदूसरे को-, दूसरी भाषा को जाने बिना भी समझ सकते हैं।

भारत की प्राचीन भाषा संस्कृत से हिंदी का विकास हुआ । भाषा "अपभ्रंश" वीं शताब्दी में 7 के रूप में हिंदी का विकास शुरू हुआ और वीं शताब्दी तक स्थिर हो गया । तुलसीदास और 10 कबीर, कुछ प्रसिद्ध हिंदी कवि हैं । हिंदी की बोलियों में अवधी, ब्रज, भोजपुरी, बुंदेली, बघेली, छत्तीसगढ़ी, डोगरी और मारवाड़ी शामिल हैं। हरियाणवी, राजस्थानी और बंगाली जैसे क्षेत्रीय लहजे के साथ हिंदी भी बोली जाती है। बॉम्बे हिंदी फैल रही है क्योंकि बॉलीवुड फिल्में इसका इस्तेमाल करती हैं।

देवनागिरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी, अंग्रेजी भाषा के साथसाथ भारत सरकार की - आधिकारिक भाषाओं में से एक है जिनकी कुल संख्या 22 है है। आम धारणा के विपरीत , हिंदी भारत की राष्ट्रीय भाषा नहीं है क्योंकि भारतीय संविधान में किसी भी भाषा को ऐसा दर्जा नहीं दिया गया था ।

भारत के बाहर भी, कई अन्य भाषाओं को आधिकारिक तौर पर के रूप में मान्यता "हिंदी"प्राप्त है, लेकिन यहां वर्णित मानक हिंदी भाषा का उल्लेख नहीं है और इसके बजाय हिंदुस्तानी जैसे अवधी और भोजपुरी की अन्य बोलियों का उल्लेख हैं। ऐसी भाषाओं में फिजी हिंदी शामिल है, जो कि फिजी और कैरेबियन हिन्दुस्तानियों में आधिकारिक है , जो त्रिनिदाद और टोबैगो , गुयाना और सूरीनाम में एक मान्यता प्राप्त भाषा है । विशिष्ट शब्दावली के अलावा , बोली जाने वाली हिंदी मानक उर्दू के साथ पारस्परिक रूप से साझादार है , हिंदुस्तानी का एक और मान्यता प्राप्त रजिस्टर है।

भाषाई विविधता के रूप में, मंदारिन , स्पेनिश और अंग्रेजी के बाद हिंदी दुनिया में चौथी सबसे अधिक बोली जाने वाली पहली भाषा है। मंदारिन और अंग्रेजी के बाद उर्दू के साथसाथ हिंदुस्तानी - के रूप में, यह दुनिया में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है ।

भारत की स्थानीय भाषा, दिल्ली और आसपास के क्षेत्र में बोली जाने वाली आधुनिक मानक हिंदी पर आधारित है । उर्दू (हिंदुस्तानी का एक अन्य रूप) ने, मुगल काल के बाद में भाषाई (1800) वीं शताब्दी के अंत में 18 प्रतिष्ठा हासिल की। आधुनिक हिंदी और इसकी साहित्यिक परंपरा वीं शताब्दी के अंत में 19 विकसित हुई।, उर्दू से अलग हिंदुस्तानी के मानकीकृत रूप में हिंदी को विकसित करने के लिए एक आंदोलन का सूत्रपात हुआ। में 1881, बिहार ने उर्दू को प्रतिस्थापित करते हुए हिंदी को अपनी एकमात्र आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकार किया और इस तरह हिंदी को अपनाने वाला भारत का पहला राज्य बन गया। आधुनिक मानक हिंदी इस संबंध में सबसे कम उम्र की भारतीय भाषाओं में से एक है।

भारतीय संविधान की अनुसूची VIII भारतीय राष्ट्रमंडल की आधिकारिक भाषा से संबंधित है। धारा 343(1) के अनुसार भारतीय संघ की राजभाषा हिन्दी एवं लिपि देवनागरी होगी। संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिये प्रयुक्त अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय स्वरूप अर्थात) 1, 2, 3 आदि होगा। (

को 1949 सितंबर 14, भारत की संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी को अपनाया और भारत गणराज्य की आधिकारिक भाषा के रूप में, ब्रिटिश भारत में उर्दू के पिछले उपयोग की जगह ली जिसे हम हिंदी दिवस के रूप में मनाते है |

आर.के .विमल
अपर महाप्रबंधक (तकनीकी सेवा), इरेडा

माँ-बाप

(विनम्र श्रदांजलि)

यादों का महकता हुआ गुलदस्ता है जिंदगी
गर हों खुशनुमा तो गुदगुदा जाती हैं
और हों गर गमगीन तो पलकें भिगो जाती हैं
रहनुमां होते हैं माँ-बाप
जिनका तसुव्वर बड़ी किस्मत से मिलता है
जो अगर चले जाते हैं दुनिया से
तो उनका जिक्र ताउम्र यादों में ही सिमटता है
पिता मेरे थे सादगी की मूरत
सिखाया जिन्होंने हमेशा सच्चाई का सबक
करो हमेशा सबका सदा ही भला
चाहे कोई कैसे भी करे कर्म
कहा उन्होंने कि
"संतोष" है अनमोल रत्न जिसका न कोई मोल
ईमानदारी है सच्चा गहना
कड़ी मेहनत का कोई न तोड़
मेरी माँ ने मुझे सिखाया, रिश्तों को सँभालना
कहा कि झुके हुए पेड़ों पर ही फल लगते हैं
इसीलिए यदि झुकने से तुम्हारे, रिश्ता सँभलता हो
तो तुम झुक जाना
पर रिश्तों को कभी न बिखरने देना
जाते जाते यही सिखा गए कि
कभी दु:खों का गम न करो
अगर अच्छा वक्त सदा नहीं रहता
तो बुरा भी कट ही जाता है
बस तुम सबके साथ अच्छा करो
इसी से जीवन सँवर जाता है ।
मिलती है जो खुशबू गुलाब से,
तो काँटे भी चुभ जाते हैं
करते हैं जिनसे हम सबसे ज्यादा प्यार
अकसर दर्द और तकलीफ
उन्हीं से पाते हैं ।

°°°°°°°°°°

रोहित गुप्ता
जन संपर्क अधिकारी, इरेडा

भगत सिंह के भाई से वो यादगार मुलाकात

लगभग पंद्रह साल पहले की बात है, जब भगत सिंह के जीवन पर आधारित कुछ फिल्में एक साथ रिलीज हुई थीं। भगत सिंह से हम कुछ दोस्त पहले से प्रभावित थे और उन फिल्मों ने हमें और गहराई तक छुआ। उसके बाद भगत सिंह के जीवन और उनकी विचारधारा के बारे में जब और जानना शुरू किया तो पता चला कि उनका परिवार उत्तर प्रदेश के सहारनपुर में रहता था। एक दिन हम भगत सिंह के परिवार और खास तौर उनके छोटे भाई कुलतार सिंह से मिलने की इच्छा लिए दिल्ली से लोकल ट्रेन पकड़कर सहारनपुर के लिए निकल पड़े।

सहारनपुर रेलवे स्टेशन के बाहर हमने एक पुलिसकर्मी से शहीद-ए-आजम के घर तक जाने का रास्ता पहुंचा और जब उस पुलिस इंसपेक्टर को यह पता चला कि हम खास तौर दिल्ली से भगत सिंह के परिवार से मिलने के लिए यहां आए हैं तो वह इतने प्रभावित हुए कि अपनी जीप में बिठाकर हमें 'भगत सिंह निवास' तक छोड़ कर आए। बाकी परिजनों से मिलने के बाद हम शहीद-ए-आजम के छोटे भाई कुलतार सिंह से मिलने उनके कमरे में पहुंचे। उनसे बातचीत शुरू हुई तो लाहौर जेल का 1931 का वह नजारा सामने आ गया, जब कुलतार और भगत सिंह की आखिरी मुलाकात हुई थी। भगत सिंह को फांसी की सजा सुनाए जाने के बाद उनके परिवार ने उनसे 3 मार्च 1931 में मुलाकात की थी। फांसी दिए जाने से पहले यह परिवार की भगत सिंह से अंतिम मुलाकात थी।

अंतिम मुलाकात में भगत सिंह के छोटे भाई कुलतार भी शामिल थे। मुलाकात के दौरान कुलतार सिंह काफी उदास थे और वो अपने आंसू भी नहीं रोक सके। बतौर कुलतार सिंह, शहीद-ए-आजम)कुलतार भगत सिंह का नाम नहीं लेते थे (फांसी की सजा मिलने के बाद भी घबराए हुए नहीं थे। बल्कि वह तो मुझे हौंसला दे रहे थे कि तुम हिम्मत मत हारना और मां का ख्याल रखना। मुलाकात के बाद कुलतार सिंह ने भगत सिंह से पत्र लिखने की गुजारिश की थी। उन्होंने कुछ शेर लिखने को भी कहा था। उन्हें पता था कि भगत सिंह शेरो-शायरी भी करते हैं। भगत सिंह ने कुलतार को एक पत्र लिखा था। वह कुछ इस तरह से था।

"अजीज़ कुलतार

आज तुम्हारी आंखों में आंसू देखकर बहुत दुख हुआ। आज तुम्हारी बातों में बहुत दर्द था। तुम्हारे आंसू मुझसे बर्दाश्त नहीं होते। बरखुदार, हिम्मत से तालीम हासिल करते जाना। सेहत का ख्याल रखना। हौसला रखना . शेर क्या लिखूं। सुनो।

उसे यह फ़िक्र है हरदम, नया तर्जे-जफ़ा क्या है?

हमें यह शौक देखें, सितम की इंतहा क्या है?

दहर से क्यों खफ़ा रहे, चर्ख का क्यों गिला करें।

सारा जहाँ अदू सही, आओ मुकाबला करें।

कोई दम का मेहमान हूँ,ए-अहले-महफ़िल, चरागे सहर हूँ, बुझा चाहता हूँ।

मेरी हवाओं में रहेगी, ख़यालों की बिजली।

यह मुश्त-ए-ख़ाक है फ़ानी, रहे रहे न रहे।

अच्छा रुखसत . खुश रहो अहले वतन . हम तो सफर करते हैं।

नमस्ते

तुम्हारा भाई

भगत सिंह"

जब राजनीति को लेकर बात चली तो कुलतार सिंह ने बताया मैं 1974 में सहारनपुर से विधायक चुना गया था और नारायण दत्त तिवारी की सरकार में खाद्य रसद और पेंशन राज्यमंत्री भी, लेकिन राजनीति मुझे रास नहीं आई। हमारी उस मुलाकात के कुछ दिन बाद पता चला कि कुलतार सिंह चंडीगढ़ के पीजीआई अस्पताल में भर्ती हैं। 5 सितंबर 2004 को वो चल बसे।

पत्रकारिता करते हुए अलग-अलग क्षेत्रों की कई बड़ी हस्तियों से मुलाकात हुई, लेकिन एक क्रांतिकारी और वो भी भगत सिंह के भाई से मिलने का वो अनभुव सबसे अद्भुत और यादगार रहा।

कार्यक्रमों की खास झलकियां

इरेडा द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताएं/कार्यशाला का आयोजन किया गया है ।

ईऑफिस में हिंदी में कार्य कैसे करें-?" विषय पर कार्यशाला का आयोजन

14वां हिंदी सममेलन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम पुरी, में राजभाषा के क्षेत्र मे उत्कृष्ट कार्य हेतु (ओडिशा) इरेडा को'शील्ड' प्रदान की गई । जिसे सुश्री संगीता श्रीवास्तव, प्रमुख प्रबंधक द्वारा ग्रहण (राजभाषा) किया गया ।

नराकास के तत्वावधान में इरेडा द्वारा आयोजित गायन प्रतियोगिता में विभिन्न उपक्रमों (पीएसयू) द्वारा इस प्रतियोगिता में भागीदारी की गई ।

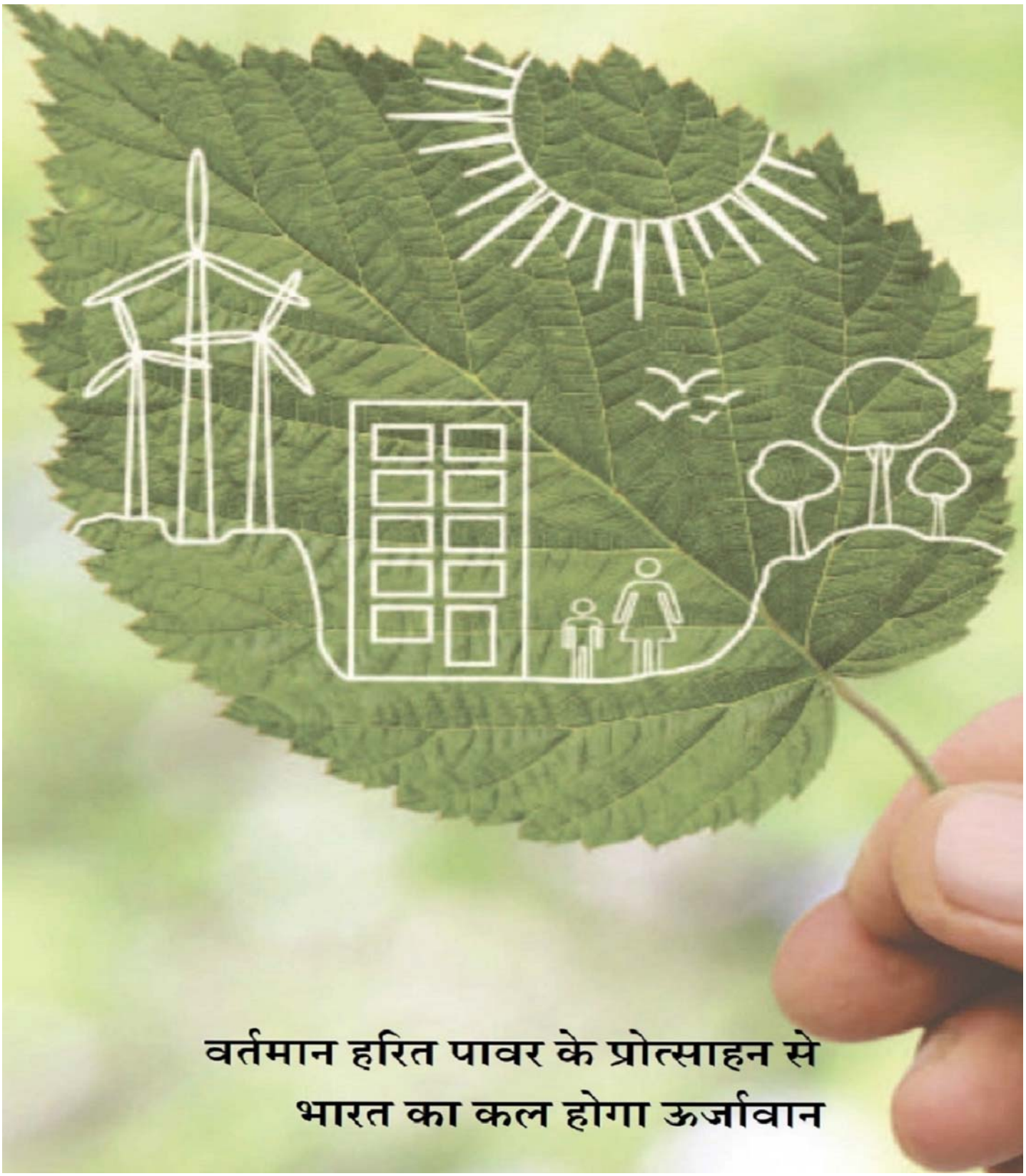

इरेडा
IREDA
[Mini Ratna Category-I PSU]
IS/ISO 9001 : 2008, 27001 : 2013 Certified

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड
(भारत सरकार का प्रतिष्ठान)
नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के अधीन मिनी रत्न पीएसयू
www.ireda.in

ENERGY FOR EVER

-

शाश्वत ऊर्जा

इरेडा
IREDA